पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

वार्षिक शुल्क : 60 रुपए

मातृवन्दना

आषाढ़-श्रावण, कलियुगाब्द 5114, जुलाई, 2012

जल है तो जीवन है

जल का संरक्षण सब करें, संत सींचेवाल समान ।
गहराते जल संकट से, रहे न कोई अनजान ।।

"साम्प्रदायिक लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयक" पर विहिप द्वारा आयोजित सेमिनार के दौरान पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डॉ. सुब्रह्मण्यम् स्वामी 'हिमालय ध्वनि' पत्रिका का विमोचन करते हुए।

सेमिनार में उपस्थित पत्रकार एवं गणमान्य जन

पंचनद शोध संस्थान (हि.प्र.) द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी में प्रदेश स्वास्थ्य मन्त्री डॉ. राजीव बिन्दल, मुख्य सचिव, हि.प्र. एवं अन्य अधिकारीगण।

कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य जन।

इस अंक में

उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात् परं बलम्।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम्।। **वा.रा.(4/1/121)**

अर्थात् लक्ष्मण जी भगवान श्रीराम से कहते हैं - भैया! उत्साह ही बलवान होता है, उत्साह से बढ़कर दूसरा कोई बल नहीं है। उत्साही पुरुष के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है।

वर्ष : 12 अंक : 07

मातृवन्दना

मासिक

आषाढ़-श्रावण, कलियुगाब्द 5114, जुलाई, 2012

परामर्शदाता
सुभाष चन्द्र सूद

✡

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

✡

सह-सम्पादक
कृष्ण मुरारी

✡

वार्षिक शुल्क
साठ रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
शर्मा भवन, नया
शिमला-171 009
दूरभाष व फैक्स :
0177-2671990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा शर्मा बिल्डिंग, बीसीएस, शिमला-171009 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

हमसे दूर जाता पानी.....8

कुदरत ने भारत को भरपूर पानी दिया था। देश-भर में सबको पानी मुहैया था। देश के कुछ भागों को छोड़कर बाकी हिस्सों में लगभग सामान्य वर्षा होती थी। दुर्भाग्य ही है कि हम इस पानी को सम्भाल और सहेज नहीं पाए। पहले हमारी पानी के रख-रखाव और संग्रहण की व्यवस्थाएं भी बेहद अच्छी थीं। स्थानीय मिट्टी, पठार, ढलान, समतल और भूगोल के हिसाब से ही पानी संजोया जाता था। मौसम, परम्पराएं, लोगों की आदतें, उत्सव, रीति-रिवाज, अंधविश्वास और मान्यताएं भी कहीं न कहीं इस पानी और उसके संरक्षण से जुड़ी थीं। पानी का कारगर प्रबंधन उनके जीवन से गहरे जुड़ा था।

सम्पादकीय	गहराते जल संकट के प्रति जागरुकता जरूरी	5
प्रेरक प्रसंग	राष्ट्र धर्म सर्वोपरि	6
चिन्तन	सनातन है जीने की कला	7
संगठनम्	तिब्बत में चीन की मौजूदगी हिमालय के लिये घातक	12
देवभूमि	सेवा भारती ने खोला हेल्पलाईन काउंटर	15
देश-प्रदेश	दो करोड़ टन गेहूं के सड़ने की नौबत	16
घूमती कलम	पाकिस्तान में हिन्दुओं की दुर्दशा	18
दृष्टि	अपनी अंधेरी जिन्दगी में जलाया सफलता का दीया	20
प्रतिक्रिया	इंगलिश मीडिया का अत्याचार	21
काव्य-जगत	खामोश हैं, मजबूर हैं!	22
महिला जगत	नारी जागरण की अग्रदूत लक्ष्मीबाई केलकर	23
स्वास्थ्य	हर फल कुछ कहता है!	24
कृषि	हरी सब्जियों के भीतर क्या है?	25
युवा-पथ	वाटर हारवेस्टिंग में युवाओं के लिये कैरियर	26
समसामयिक	मत बांधो बाबा अमरनाथ की यात्रा को	27
विविध	शुद्ध पानी का गंदा धंधा	29
संस्कृतम्	ज्ञान-विज्ञान की भाषा है संस्कृत	31
विश्व दर्शन	गोर्बाचोव की धेवती सीख रही है वास्तुशास्त्र	32
बाल जगत	कम्प्यूटर वायरस क्या है?	34

पाठकीय

पाठकों के पत्र.....

जून माह के अंक में छत्रपति शिवाजी के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई है। आज शिवाजी की नीतियों का अनुसरण करके ही हम हिन्दुत्व की रक्षा कर सकते हैं।

भारत का उत्थान और पतन हिन्दुओं पर ही निर्भर करता है। अगर हिन्दू नहीं जागा तो बहुत विकट स्थिति आने वाली है। आज कोई भी राष्ट्र यहां तक कि हिन्दू बहुल भारत भी खुल कर हिन्दुओं की चिंता नहीं करता। यहां तो सभी सुविधाएं तथा विशेषाधिकार अल्पसंख्यकों के लिये हैं। प्रधानमंत्री भी यहां के सभी संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का मानते हैं। यहां तो जो जितना हिन्दू विरोधी, वह उतना ही बड़ा सैकुलर। हिन्दू हितों की बात करने वाले को साम्प्रदायिक घोषित कर दिया जाता है।

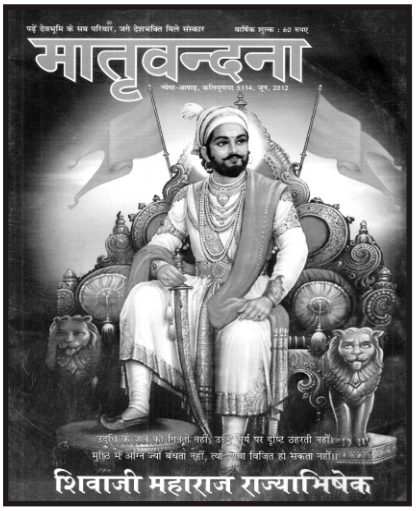

ऐसे में हमें अपनी चिंता स्वयं करनी होगी। हिन्दू समाज को संगठित होना होगा। संगठित हिन्दू ही समर्थ भारत का निर्माण कर सकते हैं। एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरकर स्वयं तथा अपनी संस्कृति को समृद्ध तथा शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित कर सकते हैं।

– **सुरेंद्र पाल वैद्य**, मण्डी

बहुत सटीक एवं तथ्यपूर्ण था सम्पादकीय 'पत्रकारिता में नारदीय गुण आवश्यक।' हमारा मीडिया जिस ढंग से अपना कर्त्तव्य निभा रहा है उस दृष्टिकोण से पूर्णतया उद्देश्य की पूर्ति संभव नहीं है। तथापि मीडिया लोकतंत्र का चौथा खम्भा है। न्यायपालिका और मीडिया की ही वजह से सरकार के कार्यकलापों में त्रुटियां ढूंढ-ढूंढ कर मुल्क के अवाम के सामने रखी गई है। भ्रष्टाचार, काले धन के विषय पर मीडिया ने सरकार को ही जिम्मेदार ठहराया और सरकार के समक्ष आने वाली कठिनाइयों को उजागर किया है। इस देश में लोकतंत्र राजनीति के मकड़जाल में उलझ कर रह गया है। इसलिये मीडिया को उसके संचालनकर्त्ता उद्योगपति कहीं न कहीं निजी स्वार्थ एवं लाभ के वशीभूत सत्ता और राजनीति के गलियारों में ज्यादा उलझाए रखते हैं व टी.आर.पी. के चक्कर में सामाजिक सरोकार की अवहेलना कर अनावश्यक विषयों पर ज्यादा बल देते हैं। मीडिया और उसका कैमरा भी उन पर अधिक घूमता है जो चेहरे जाने पहचाने हो। वानखेड़े स्टेडियम में एम.सी.ए. और शाहरुख खान के बीच जो घटा उस विषय पर मीडिया ने अपना काफी कीमती समय बर्बाद किया। घटनाओं को लम्बा तब खींचना चाहिये जब विषय सामाजिक और मानवीय अधिकारों से जुड़े हों। व्यक्तिगत विषय पर इतनी कवरेज उचित नहीं है। आप से भी मेरा निवेदन है कि मातृवन्दना में लिखे जाने वाले लम्बे लेख एक पृष्ठ से अधिक न होकर संक्षेप में हो ताकि अन्य नए लेखकों की प्रस्तुतियों को जगह मिल सके। आलोचनाओं का आधार और उनकी जरूरत होना अनिवार्य है। समाज सुधारक विषयों को प्रकाशित करने से पाठक उबाऊपन महसूस नहीं करेंगे। धर्म, कर्म, समाज, सरकार, ये विषय महत्त्वपूर्ण हैं, इन पर लेख लिख कर पत्रिका को रोचक बनाने का प्रयत्न होना चाहिये।

– **के.सी. शर्मा**, कांगड़ा

मैं वर्षों से मातृवन्दना का नियमित पाठक हूं और यह पत्रिका कदम-दर-कदम परिपक्वता की ओर बढ़ी है। विश्वास करता हूं इसी प्रकार यह पत्रिका उन्नति करती रहेगी और लोगों को एक दृष्टि देने में सक्षम होगी।

स्थानीय स्तम्भों या विषयों के साथ-साथ इस पत्रिका में योग व धर्म जरूर जोड़ें। आजकल दैनिक समाचार पत्रों में भी योग या धर्म पर साप्ताहिक कॉलम जरूर छपता है। विश्वास करता हूं कि वह स्तम्भ भी अन्य विषयों की भांति पूर्णता की ओर एक कदम होगा।

– **सुरेश शर्मा,** रिवाड़ी, कुल्लू

स्मरणीय दिवस (जुलाई)

गुरु पूर्णिमा	3 जुलाई
एकादशी व्रत	14 जुलाई
श्रावण संक्रांति	16 जुलाई
तीज	22 जुलाई
उधम सिंह शहीदी दिवस	31 जुलाई

गहराते जल संकट के प्रति जागरुकता जरूरी

पर्यावरण संकट आज विश्व की बेचैनी का मुख्य कारण बन चुका है। पश्चिम की लोभी औद्योगिक सभ्यता एवं विश्व में बढ़ती जनसंख्या का यह दुष्परिणाम है। पाश्चात्य विद्वानों ने मिट्टी, जल, हवा, आग, ताप, प्रकाश व जीव जन्तुओं को पर्यावरण का घटक बताया है किन्तु उनसे भी हजारों वर्ष पूर्व भारतीय चिंतन में पंच महाभूतों पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को न केवल पर्यावरण के घटक रूप में स्वीकार किया गया है अपितु पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति में भी कारक तत्त्व माना गया है। तीव्र औद्योगिकीकरण और प्राकृतिक सम्पदाओं के बढ़ते दोहन ने विश्व के नीतिनियंताओं को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सोचने को मजबूर कर दिया है। इसलिए संयुक्त राष्ट्र के आह्वान पर पहली बार सन् 1973 में स्वीडन में 113 देशों की प्रतिनिधियों का सम्मेलन हुआ और यह निर्णय लिया गया कि पर्यावरण के संरक्षण हेतु जन-जागृति लाने के लिये प्रतिवर्ष विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाएगा। इस वर्ष भी 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस वर्ष की थीम (विषय वस्तु) है हरित-अर्थ व्यवस्था। इस थीम का अभिप्राय ऐसी आर्थिक व्यवस्था से है जो सबको बेहतर जीवन स्तर और सामाजिक समानता प्रदान करे किन्तु साथ में ही कृषि क्षेत्र में हरितक्रांति लाने का भाव भी इसमें परिलक्षित होता है। कृषि क्षेत्र में हरितक्रांति लाने वाला मुख्य घटक जल है। आज ग्लोबल वार्मिंग और तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण जल संकट बढ़ता जा रहा है। साथ ही औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण के कारण जल की मुख्य स्रोत नदियों में जल-प्रदूषण की मात्रा में भी निरंतर वृद्धि हो रही है। अपने देश में स्थिति और भी बदतर है। यहां एक ओर गंगा-यमुना जैसी अमृततुल्य जल वाली नदियां विषैली बनती जा रही हैं, दूसरी ओर केंद्रीय सरकार सम्पूर्ण जल-व्यवस्था को निजी हाथों में सौंपने के लिये उत्सुक दिखाई देती हैं।

यह सब इसलिये हो रहा है क्योंकि हमने अपनी प्राचीन परम्परा एवं भारतीय चिंतन का परित्याग कर दिया है। मुझे याद है कि बचपन में जब स्कूल में रोज शाम को आखिरी कक्षा समाप्त होती थी तो सब यजुर्वेद के शांति पाठ 'ॐ द्यौ शांति' को बोलते थे जिसमें समूची प्रकृति से शांति प्राप्त करने हेतु प्रार्थना की जाती थी। इसमें आप: शांति अर्थात् जल हमें शांति दे, यह प्रार्थना भी की जाती थी। वैदिक काल में जल को देवता की संज्ञा दी गई थी। ऋग्वेद में आप:(जल) के लिये चार सूक्त आए हैं और शुक्ल यजुर्वेद के 15 अध्यायों में जल देवता का वर्णन किया गया है। इन्द्र इसलिए देवताओं के अधिपति हैं क्योंकि उनके पास वर्षा करने की शक्ति है। काण्व संहिता (29/5/6) में उसे मेघवर्षक और अन्न का स्वामी बताया गया है। वरुण जल का देवता है। उसके पास पाश है-वह जल का नियामक है और जल के भीतर छिपी ऊर्जा (अग्नि) का स्वामी है। जल-पाप अर्थात् जल को प्रदूषित करने वाले प्राणी को वह अपने पाश में बांधता है। हमारे हिन्दुओं के सभी तीर्थस्थल पवित्र एवं विशाल नदियों के मुहानों पर स्थित हैं जहां श्रद्धालुगण स्नान और दान करने से स्वयं को पवित्र और पुण्य भागी मानते हैं।

आज यही मोक्षदायिनी नदियां जल-प्रदूषण से भरी-पड़ी हैं। इन्हें प्रदूषण मुक्त करने के लिये सरकारें निरंतर योजनाएं बनाती रहती हैं। करोड़ों-अरबों का बजट में प्रावधान भी करती हैं किन्तु कोई साकारात्मक परिणाम स्पष्टत: दिखाई नहीं देता है। इस अंक के आवरण में हमने जल संकट से जुड़े विषयों के साथ एक ऐसे संत का जीवन चरित उद्धृत किया है जिसने अकेले ही पंजाब की एक नदी को प्रदूषण मुक्त करने का बीड़ा उठाया। उनके दृढ़ निश्चय और कर्मठता को देख लोग जुड़ते गए और अंतत: उनकी पहल और साथ जुड़ी जागरुक जनता के प्रयास से वह नदी प्रदूषण-मुक्त हो गई। केन्द्रीय और राज्य सरकारों को अवश्य यह सोचना चाहिये कि जब एक साधनहीन व्यक्ति उपरोक्त कार्य को अंजाम दे सकता है तो उनके पास तो न जाने कितने उपाय साधन और दल बल हैं जो इन देवतुल्य नदियों का कायाकल्प कर सकते हैं। किन्तु दुर्भाग्य तो यह है कि सरकार के पास प्राण-धारक जल के लिये कोई स्पष्ट नीति है ही नहीं। जल संकट दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। भूमि के नीचे से जल का निरंतर दोहन करने से जलस्तर काफी नीचे चला गया है। फसलों की सिंचाई के लिये पर्याप्त जल न मिलने के कारण कृषि आधारित अर्थव्यवस्था पर सीधा प्रभाव पड़ता दिखाई दे रहा है। इससे भी आगे बढ़कर यदि जल का निजीकरण किया जाता है और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हाथों जल नियंत्रण चला जाता है तो आम जनता को तो पीने के पानी के लिये भी तरसना पड़ेगा। समय रहते हमें जागना होगा। वर्षा के जल-संग्रहण के पुरातन उपायों में पुन: सक्रियता लानी होगी। कुएं, बावड़ियां, पोखर, तालाब और सरोवरों का स्वयं मिलकर अधिकाधिक निर्माण करना होगा। जल के अनावश्यक खर्च पर नियंत्रण लगाना होगा। जल-वितरण को सुचारू रूप से व्यवस्थित करना होगा। ऐसी व्यवस्था करनी होगी कि देश की सभी नदियों में शहर का कूड़ा-कचरा और सीवरेज-तत्त्व कदापि प्रवाहित न हो। ❑

प्रेरक प्रसंग

भारत तभी जगेगा जब विशाल हृदय वाले सैकड़ों नर-नारी, भोग-विलास तथा सुख की इच्छाओं को छोड़कर मन, वचन और कर्म से उन करोड़ों भारतीयों के कल्याण के लिये सचेष्ट होंगे जो दरिद्रता के अगाध सागर में डूबते जा रहे हैं।

– स्वामी विवेकानन्द

दार्शनिक की सोच आज भी प्रासंगिक

रोमन संविधान का खाका तैयार करने में लगे दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, विधिवेत्ता और वक्ता मार्क्स तूलियस सिसेरो (106 ई. पू. से 43 ई.पू.) अपने व्याख्यानों और लेखों में जगह-जगह कही गई करीब सवा सौ बातें आज भी याद की जाती हैं। उनमें से कुछ अंश यहां उद्धृत है–

- हो सकता है कृतज्ञता का कोई खास महत्त्व न हो पर वह दूसरे तमाम गुणों और फायदों की अभिभावक जरूर है।
- हजारों साल से इंसान की सोच में ये छह बातें शुमार है। एक- दूसरों को कुचलकर ही आगे बढ़ा जा सकता है, दो- उन हालातों की चिंता करना जिन्हें न तो कोई बदल सकता है और न ही सुधार सकता है, तीन- यह मानना कि जो काम हमारे बस में नहीं है वह नामुमकिन है, चार- ओछी प्राथमिकताओं को कायम रखते हुए जरूरी कामों को टालना, पांच- औरों के बारे में यह सोचना कि मन साफ रखनी चाहिये और उसमें दूसरों के लिये गुंजाइश भी रखना चाहिये, छह- यह मानना कि हमारी तरह ही दूसरों को भी सोचना और जीना चाहिये।
- हर किसी को जिन्दगी कम ही मिलती है पर ईमानदारी और बेहतर तरीके से जीने के लिये काफी है।
- जो बात नैतिक तौर पर सही नहीं है, उनसे किसी का फायदा नहीं होता फिर भी उन तौर तरीकों को लोग अपनाना चाहते हैं। हालांकि फायदा उन्हें भी नहीं होता पर जब तक उन्हें महसूस होता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। असल में तो यह सोचना ही दुखदाई है कि किसी बुरे तरीके से कुछ लाभ उठाया जा सकता है।
- मुसीबत के वक्त अपने बाल नोचना बेवकूफी है। अगर ऐसा होता तो गंजे हो जाने पर दु:ख तकलीफें कम हो जातीं। अर्थात् मुसीबत के वक्त रोना-कल्पना फिजूल है।
- सिर्फ विक्षिप्त जन ही नाचते समय गम्भीर रह सकते हैं।
- जन कल्याण का ध्येय ही सर्वोत्तम है। ❑

राष्ट्र धर्म सर्वोपरि

हमारे देश में धर्म, सम्प्रदाय, मजहब और जात-पात के आधार पर विविधता रहते हुए भी अनेकता है। वर्तमान समय में भारत देश में प्रधानमंत्री के पद पर श्री मनमोहन सिंह पिछले सात वर्षों से सुशोभित है जो सिक्ख समुदाय से सम्बंध रखते हैं। वर्तमान राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल हिन्दू समुदाय से सम्बंध रखती है। महिला होने के नाते वे महिला वर्ग को भी गौरवान्वित करती है। पिछले राष्ट्रपति मुसलमान समुदाय में से थे जिनका नाम एपीजे अब्दुल कलाम था और जो एक प्रभावशाली राष्ट्रपति थे। वर्तमान में उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी हैं जो मुसलमान समुदाय से सम्बंध रखते हैं। लेकिन हमारे मन में यह भाव कदापि नहीं आना चाहिये कि कोई पद किस समुदाय को दिया गया है, न ही पद प्राप्त करने वाले के मन में। प्रत्येक प्रतिष्ठित व्यक्ति या आम व्यक्ति के मन में एक ही भाव होना चाहिये और सभी का एक ही धर्म होना चाहिये वह है राष्ट्र धर्म। चाहे कोई हिन्दू हो या सिक्ख, ईसाई, मुसलमान हो या कोई और किन्तु राष्ट्र धर्म से ऊपर नहीं है। क्योंकि राष्ट्रधर्म ही सर्वोपरि धर्म है। जब देश के उच्च पदों को प्राप्त करने में राजनीतिक दल धर्म, जाति, मजहब आदि का सहारा लेने लगते हैं, तो सोच लो कोई भी दल राष्ट्रधर्म नहीं निभा रहा है। देश के उच्च पदों की प्राप्ति के लिये देश के राजनीतिक दलों को नि:स्वार्थ भाव से सोचना चाहिये। कोई पद धर्म के आधार पर नहीं अपितु गुणों और श्रेष्ठता के आधार पर तय किया जाना चाहिये। समय की मांग यह है कि प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति पदों पर राजनीति न हो अपितु ये पद धर्म, जाति के आधार पर नहीं बल्कि काबलियत के आधार पर होने चाहिये, अन्यथा आम जनता को ही इन पदों का फैसला करने दिया जाए। ❑

जगदीश कुमार, बिलासपुर

सनातन है जीने की कला!

❑ चेतन कौशल नूरपुरी

'जीना एक कला है' यह सब जानते हैं किन्तु जिया कैसे जाता है?हमें इसका सही ज्ञान भारतीय सनातन जीवन पद्धति से प्राप्त होता है।

चिंता नहीं चिंतन करो : भले ही जनसाधारण का मन अत्यधिक बलशाली हो, परन्तु वह स्वभाव से कभी कम चंचल नहीं होता है। अपनी इसी चंचलता के कारण, वह इन्द्रियरूपी घोड़ों पर सवार होकर, विषयों का रसास्वादन करने हेतु हर पल लालायित रहता है। वह अपने जीवन के अति आवश्यक कल्याणकारी उद्देश्य भूलकर सत्य और धर्म-मार्ग से भी भटक जाता है। वह बार-बार निरर्थक प्रयास एवं चेष्टाएं करता है जिनसे उसे असफलता एवं निराशा मिलती है। वह प्रभु-कृपा से अनभिज्ञ होता है, अत:वह चिंतागस्त होकर दु:ख पाता है। परंतु राजग जिज्ञासु, युवा-साधक और विज्ञप्राणी अपने नियंत्रित मन से, सत्य एवं धर्म प्रिय कार्य करते हुए सदैव चिंतामुक्त रहते हैं। वह अपने जीवन में सफलता और वास्तविक सुख-शांति प्राप्त करते हैं।

मोह निद्रा का त्याग करो : सत्य और धर्म के मार्ग से भ्रमित पुरुष पतित, मनोविकारी, स्वार्थवश अंधा एवं इंद्रियों का दास होता है। वह धार्मिक शिक्षा, संस्कार एवं समय पर उचित मार्गदर्शन के अभाव में अपने हितैषियों के साथ सर्वप्रिय कार्यों का सहभागी न बनकर मनोविकार, अपराध और षड्यंत्रों में संलिप्त रहता है। यही उसकी मोह-निद्रा है। इसी मोह-निद्रावश वह अपनी आत्मा, परिवार, गांव, राज्य, राष्ट्र और विश्व के विरुद्ध कार्य करता है।

मोह निद्रा का त्याग करो : सत्य और धर्म के मार्ग से भ्रमित पुरुष पतित, मनोविकारी, स्वार्थवश अंधा एवं इंद्रियों का दास होता है। वह धार्मिक शिक्षा, संस्कार एवं समय पर उचित मार्गदर्शन के अभाव में अपने हितैषियों के साथ सर्वप्रिय कार्यों का सहभागी न बनकर मनोविकार, अपराध और षड्यंत्रों में संलिप्त रहता है। यही उसकी मोह-निद्रा है। इसी मोह-निद्रावश वह अपनी आत्मा, परिवार, गांव, राज्य, राष्ट्र और विश्व के विरुद्ध कार्य करता है। वह दूसरों को शारीरिक यातना, मानसिक वेदना और आर्थिक कष्टों से संत्रस्त कर सत्ता, पद, धन, बाहुबल और अमूल्य समय का दुरुपयोग करता है जिनसे नए-नए संकट, कठिनाइयां, समस्याएं, बाधाएं और चुनौतियां पैदा होती हैं। परिणामस्वरूप वह प्रभु कृपा से वंचित रहता है। लेकिन सजग जिज्ञासु, युवा-साधक और मुनि जन सर्व प्रिय कार्य एवं आत्मोन्नति करते हुए प्रभु-कृपा के पात्र बनते हैं।

स्वयं की पहचान करो : युद्ध भूमि में परिणत कुरुक्षेत्र में गीता उपदेश देते हुए श्री कृष्ण जी कहते हैं– 'हे अर्जुन! स्वयं को जानो। इसके लिये सर्वप्रथम तुम जीवनोद्देश्य में सफलता पाने हेतु अपने मनोविकारों के प्रति, प्रतिपल सजग और सतर्क रहकर युक्ति-युक्त अभ्यास एवं वैराग्य-श्रम करो, अपने मन का स्वामी बनो। स्थितप्रज्ञ, धर्मपरायण एवं कर्तव्यनिष्ठ होकर, सर्व हितकारी लक्ष्य-बेधन अर्थात् युद्ध करो। तदुपरांत सृजनात्मक, रचनात्मक, सकारात्मक तथा जन हितकारी कर्मों को व्यावहारिक रूप दो। तुम्हारी विजय निश्चित है। इसमें तुम किसी प्रकार का संदेह न करो, मोह त्याग दो। सत्य और धर्म की रक्षा हेतु धर्मयुद्ध करो। इस समय तुम्हारा यही कर्तव्य है।' निस्संदेह यह उपदेश अर्जुन जैसे किसी जिज्ञासु, युवा साधक और श्रेष्ठ जन के लिये आत्म जागरण और प्रभु-कृपा का प्रशस्त मार्ग बन सकता है।

प्रभु-कृपा का पात्र बनो : ऐसे जिज्ञासु, युवा साधक, श्रेष्ठजन, और योगी पुरुष जो बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय नीति के अंतर्गत उपरोक्त सर्व प्रिय कार्य करते हैं, उनसे इनका अपना तो भला होता ही है, साथ ही साथ दूसरों को भी लाभ मिलता है। इस प्रकार जो समान दृष्टि से सभी के प्रति अनुरक्त है और सेवाशील है उसे सभी ओर प्रभु-कृपा, आनन्द ही आनन्द और परमानन्द दिखाई देता है। धर्म-कर्म है जहां, प्रभु-कृपा है वहां। भारतीय सनातन जीवन पद्धति के इस उद्घोष को साकार करने हेतु प्रत्येक भारतीय जिज्ञासु युवा साधक विज्ञ नर नारी में बलशाली मन द्वारा निश्चित कर्म करने के साथ-साथ, अपने लक्ष्य-बेधन की प्रबल इच्छा-शक्ति और कार्य क्षमता अवश्य होनी चाहिये। इस प्रवृत्ति का समाज ही गर्व के साथ भारत का माथा ऊंचा करता है और समय आने पर विश्व में अपना लोहा मनवा सकता है। इस प्रकार से भारत का खोया हुआ पुरातन गौरव, पुन: प्राप्त हो सकता है। ❑

हमसे दूर जाता पानी

❑ डॉ. के.एस. तिवारी

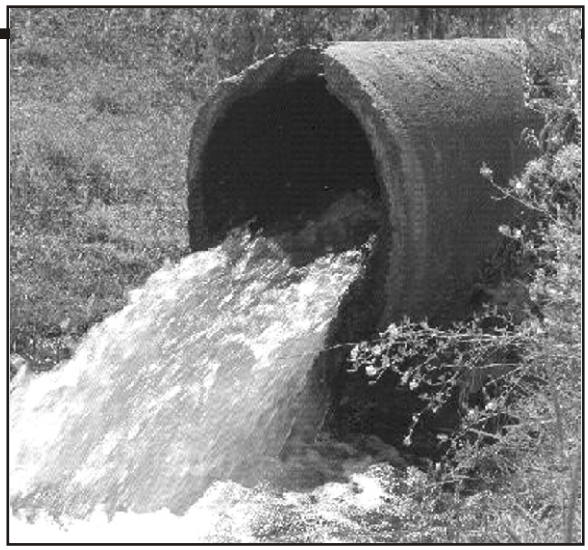

भारत में दो सौ साल पहले लगभग 21 लाख, सात हजार तालाब थे। साथ ही लाखों कुएं, बावड़ियां, झीलें, पोखर और झरने भी। हजारों छोटी-बड़ी हर समय पानी से भरी नदियां भी थीं। आबादी बहुत कम थी। लोग अच्छे थे। संयमी, सदाचारी और कम से कम में भी काम चला लेने वाले। लालच भी न के बराबर था। उनकी पानी की जरूरतें भी कम थीं। जो थीं भी तो वे बहुत मजे से पूरी हो जाती थीं। अब तालाबों सहित ज्यादातर पानी गायब हो रहा है। नदियों की हालत बेहद गम्भीर है। छोटी नदियां तो मर गई, बड़ी नदियां भी गहरे संकट में हैं। वे कब तक बह पाएंगी, कहना मुश्किल है।

कुदरत ने भारत को भरपूर पानी दिया था। देश-भर में सबको पानी मुहैया था। देश के कुछ भागों को छोड़कर बाकी हिस्सों में लगभग सामान्य वर्षा होती थी। दुर्भाग्य ही है कि हम इस पानी को सम्भाल और सहेज नहीं पाए। पहले हमारी पानी के रख-रखाव और संग्रहण की व्यवस्थाएं भी बेहद अच्छी थीं। स्थानीय मिट्टी, पठार, ढलान, समतल और भूगोल के हिसाब से ही पानी संजोया जाता था। मौसम, परम्पराएं, लोगों की आदतें, उत्सव, रीति-रिवाज, अंधविश्वास और मान्यताएं भी कहीं न कहीं इस पानी और उसके संरक्षण से जुड़ी थीं। पानी का कारगर प्रबंधन उनके जीवन से गहरे जुड़ा था। राजस्थान का उदाहरण सामने है। वहां के लोगों की जीवनशैली, खेती-पाती, आदतें और त्योहार आदि कम पानी से ही काम चलाने के रहे हैं।

हमारे देश में समाज का प्रत्येक वर्ग पानी से जुड़ा था। हमारी दिनचर्या में सभी जगह पानी शामिल था। हमारी कृषि, उद्योग, बिजली उत्पादन, सुख-समृद्धि और समूचे विकास का आधार पानी ही है। एक वर्ष भी अवर्षा की स्थिति भयावह होती है। समूचे विकास का गणित गड़बड़ा जाता है। अर्थव्यवस्था चरमरा जाती है। सकल घरेलू उत्पादन की दर सीधे नीचे आ जाती है।

पिछले पचास सालों में हमने हजारों साल जांची-परखी और स्थापित जल परम्पराओं को खत्म कर दिया। अधिक पानी उपयोग की जीवन शैली अपना ली। कृषि और उद्योगों के विस्तार ने पानी के संसाधनों पर भारी दबाव पैदा कर दिया। पहले सतह का पानी खत्म हुआ, फिर जमीन के नीचे पानी को निचोड़ने के नए-नए तरीके ढूंढ लिए गए। तकनीकों और सस्ती या मुफ्त बिजली ने रही सही कसर पूरी कर दी। अब गांवों, नगरों, शहरों खेतों और उद्योगों में चौतरफा बेलगाम पानी निकालने की होड़ और छीनाझपटी शुरू हो गई है। नई तकनीक ने अधिक से अधिक पानी निकालने के ढंग सिखा दिए। इन बिगड़ते हालात में पानी के लिये जूझते भारत और एक तिहाई दुनिया के लिये शायद यह आखिरी चेतावनी है।

भारत में अब जो पानी मौजूद है, उससे हमारी आधी जरूरतें ही पूरी हो पाएंगी। शेष 50 प्रतिशत के लिये अब पानी नहीं है। पुराने पानी के स्रोत यदि संरक्षित रहते तो ये मुश्किलें न आतीं। पर ऐसा हुआ नहीं। देश की विशाल और बढ़ती आबादी को पेट भरने के लिये अन्न की जरूरत थी। अन्न पैदा करने के लिये उन्नत कृषि और सिंचाई के विस्तार की। सिंचाई हेतु बांध बने पर बांधों से ढेरों समस्याएं भी पनपीं। हम बांधों की हालत ठीक न रख सके। इनकी जल भरण क्षमता लगातार घटती गई। भू क्षरण, वनों की कटाई, अतिक्रमण, बसाहट और गाद भरने से अधिकांश बांध बेकार हो गए। इसी के कारण भरपूर जल संसाधनों के बावजूद हम जल विद्युत क्षमता को भी 20 प्रतिशत

अब भी समय है जब पानी और पानी के संसाधनों का चतुराई से प्रबंधन किया जाए। सम्पूर्ण ध्यान पानी के वितरण को बढ़ाने पर न दिया जाए। जरूरत है कि ध्यान इस पर हो कि पानी कैसे बचे या कम पानी का अधिकतम उपयोग कैसे हो। पानी का व्यवसाय भी देश में बड़ा आकार ले चुका है। व्यावसायिक उद्देश्यों के लिये पानी की मांग और बिक्री बढ़ रही है। कृषि और उद्योगों में पानी का बेरोकटोक दुरुपयोग रुकना चाहिये।

से अधिक नहीं बढ़ा पाए। इसके विपरीत विकसित देशों ने 80 प्रतिशत तक विद्यतु उत्पादन किया।

ऐसा नहीं कि हालात सुधर नहीं सकते। पक्का इरादा, जीवन शैली में बदलाव, अच्छी रणनीति और ठोस जमीनी प्रयास करने होंगे। जल प्रबंधन, संग्रहण और संरक्षण को कागजी आदेशों, फाइलों और कार्यशालाओं के दायरे से बाहर निकालकर जमीन पर उतारना होगा। वर्षा जल बहकर न निकल जाए, ये देखना होगा। जहां बरसे, इकट्ठा हो, वहीं रोक लेने की पहल चमत्कार कर सकती है। ऐसे चमत्कार भी हमारे देश में ही हुए हैं। अगर ऐसा हो सके तो जमीनी जल स्तर और नीचे जाने से रुकेगा, फिर थमेगा और यही प्रयास यदि जारी रहे तो ये जल स्तर ऊपर भी उठेगा। पानी के बिना विकास के सभी मॉडल अधूरे हैं और बदसूरत भी। ये चकाचौंध भरा चमकीला संसार अंधेरे में डूब जाएगा।

ऐसा नहीं कि हालात सुधर नहीं सकते। पक्का इरादा, जीवन शैली में बदलाव, अच्छी रणनीति और ठोस जमीनी प्रयास करने होंगे। जल प्रबंधन, संग्रहण और संरक्षण को कागजी आदेशों, फाइलों और कार्यशालाओं के दायरे से बाहर निकालकर जमीन पर उतारना होगा। वर्षा जल बहकर न निकल जाए, ये देखना होगा। जहां बरसे, इकट्ठा हो, वहीं रोक लेने की पहल चमत्कार कर सकती है। ऐसे चमत्कार भी हमारे देश में ही हुए हैं।

भारत में कहीं-कहीं कम वर्षा से पैदा हालात तो आने वाली समस्याओं की शुरुआत ही है। इन समस्याओं के हल ढूंढे जाने चाहिये। अच्छी गुणवत्ता के पर्याप्त पानी की कमी एक बड़ी चिंता है। भारत में पेयजल की हालत देखें तो मालूम हुआ कि यह केवल 10 हजार लाख घनमीटर है। इस हिसाब से भारत गम्भीर जल संकट की ओर बढ़ रहा है। 1000 घनमीटर प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष जल उपलब्धता तो सही संकेत देती है। एक ओर पानी तेजी से घट रहा है, दूसरी ओर दोगुनी गति से पानी की जरूरतें बढ़ रही हैं।

खेती-पाती, सिंचाई, उद्योग-धंधे, बढ़ती घरेलू जरूरतों के साथ तेज रफ्तार शहरीकरण, साल-दर-साल आते सूखे के दौर बड़ी मुसीबतों की ओर इशारा करते हैं। भविष्य में इमरजेंसी जैसे हालात पैदा होने की सम्भावनाएं बन रही हैं। इनसे निपटना चुनौती भरा काम होगा। समस्याओं के अस्थायी हल और महंगे उपाय ठीक नहीं। क्या ट्रेनों और टैंकरों से प्यासे इलाके में पानी भेजना समस्या का हल है?क्या जल आपूर्ति की यह व्यवस्था सही, दीर्घकालिक या स्थायी है। नि:संदेह नहीं। हमें अपना घोर लापरवाह रवैया बदलना होगा।

पिछले 25-30 वर्षों में मौसम बदलाव ने भी पानी के हालात को बिगाड़ा है। आईपीसीसी की रिपोर्ट के अनुसार तेजी से पिघलते ग्लेशियरों और सिकुड़ते घटते बर्फीले भंडार पानी की हालत को और भी अधिक बिगाड़ेंगे। मौसम परिवर्तन और उसके असर पर शोध बताते हैं कि कुछ क्षेत्रों में भारी वर्षा होगी तो इसके उलट दूसरी जगहों पर वर्षा का पैटर्न बदलेगा। या तो वर्षा कम होगी या अनियमित होगी। इन हालात में कहीं बाढ़ तो कहीं सूखे के हालात पनपना निश्चित है।

भारत को अपने जल संसाधनों को सहेजना सीखना होगा। देश में विशाल जल संसाधनों के बावजूद जल की कमी है। आजादी के बाद प्राकृतिक संसाधनों के विनाश पर नजर डालें तो ज्ञात होता है कि हमने जल, जंगल, वायु, भूमि के साथ जैव विविधता को भी गम्भीर क्षति पहुंचाई है। हम पर्यावरण विनाश के कारण प्रतिवर्ष सकल घरेलू उत्पादन को कम कर रहे हैं। भारत की नदी व्यवस्था खत्म हो रही है। नदियां गंदगी का अंबार ढो रही हैं, वे बीमारियों का स्रोत बन रही हैं। हजारों करोड़ की नदी सफाई योजनाओं के बाद भी वे बदबूदार गंदे नाले की शक्ल ले चुकी हैं। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है।

अब भी समय है जब पानी और पानी के संसाधनों का चतुराई से प्रबंधन किया जाए। सम्पूर्ण ध्यान पानी के वितरण को बढ़ाने पर न दिया जाए। जरूरत है कि ध्यान इस पर हो कि पानी कैसे बचे या कम पानी का अधिकतम उपयोग कैसे हो। पानी का व्यवसाय भी देश में बड़ा आकार ले चुका है। व्यावसायिक उद्देश्यों के लिये पानी की मांग और बिक्री बढ़ रही है। कृषि और उद्योगों में पानी का बेरोकटोक दुरुपयोग रुकना चाहिये। कृषि क्षेत्र में शोध के जरिये कम पानी में होने वाली फसलों को बढ़ावा देना समय की मांग है।

हमसे दूर जाते पानी को रोकने के लिये हमें एक बार फिर पीछे लौटना होगा यानी पानी संजोने की जांची-परखी परम्पराओं को फिर से जीवित करना होगा। भारत में पानी के प्रबंधन की परम्पराएं हजारों वर्ष तक व्यवहार में रही है। जल समस्याओं के स्थायी हल निकालने होंगे। पानी के विवेकपूर्ण प्रबंधन हेतु संस्थागत बदलाव भी जरूरी है। यह अत्यंत सतर्कता का समय है। इस समय जल संरक्षण एवं प्रबंधन के मोर्चे पर लापरवाहियों के खामियाजे गम्भीर होंगे। हमारी सामाजिक प्रणाली और विरासत को बिखरने से रोकने के लिये अगले कुछ कदम निर्णायक होंगे। ❑

जल सेवक : संत बलबीर सिंह सींचेवाल

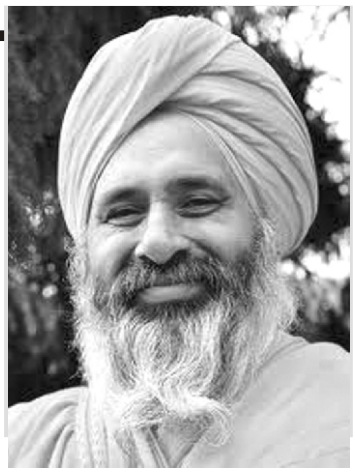

भारत में संत, महात्माओं की छवि मुख्यत: धर्मोपदेशक की है; पर कुछ संत पर्यावरण संरक्षण, सड़क एवं विद्यालय निर्माण आदि द्वारा नर सेवा को ही नारायण सेवा मानते हैं। ऐसे ही एक संत हैं बलबीर सिंह सींचेवाल, जिन्होंने सिख पंथ के प्रथम गुरु श्री नानकदेव के स्पर्श से पावन हुई 'काली बेई' नदी को शुद्ध कर दिखाया। यह नदी होशियारपुर जिले के धनोआ गांव से निकलकर हरीकेपत्तन में रावी और व्यास नदी में विलीन होती है।

बलबीर सिंह जी ग्राम सींचेवाल के निवासी हैं। एक बार भ्रमण के दौरान उन्होंने सुल्तानपुर लोधी (जिला कपूरथला) गांव के निकट बहती काली बेई नदी को देखा। वह इतनी प्रदूषित हो चुकी थी कि स्नान और आचमन करना तो दूर, उसे छूने से भी डर लगता था। दुर्गन्ध के कारण उसके निकट जाना भी कठिन था 162 किलोमीटर लम्बी नदी में निकटवर्ती 35 शहरों का मल-मूत्र एवं गंदगी गिरती थी। नदी के आसपास की जमीनों को भ्रष्ट पटवारियों ने बेच दिया था या फिर उन पर अवैध कब्जे हो चुके थे। लोगों का ध्यान इस पवित्र नदी की स्वच्छता की ओर बिल्कुल नहीं था।

ऐसे में संकल्प के धनी बलबीर सिंह जी ने कारसेवा के माध्यम से इस नदी को शुद्ध करने का बीड़ा उठाया। उनके साथ 20-22 युवक भी आ जुटे। 16 जुलाई, 2001 ई. को उन्होंने वाहे गुरु को स्मरण कर गुरुद्वारा बेर साहिब के प्राचीन घाट पर अपने साथियों के साथ नदी में प्रवेश किया; पर यह काम इतना आसान नहीं था। स्थानीय माफिया, राजनेताओं, शासन ही नहीं, अपितु गुरुद्वारा समिति वालों ने भी इसमें व्यवधान डालने का प्रयास किया। उन्हें लगा कि इस प्रकार तो हमारी चौधराहट ही समाप्त हो जाएगी। कुछ लोगों ने तो उन कारसेवकों से सफाई के उपकरण भी छीन लिये।

पर संत सींचेवाल ने धैर्य नहीं खोया। उनकी छवि क्षेत्र में बहुत उज्ज्वल थी। वे इससे पहले भी कई विद्यालय और सड़क बनवा चुके थे। उन्हें न राजनीति करनी थी और न ही किसी संस्था पर अधिकार। अत: उन्होंने जब प्रेम से लोगों को समझाया, तो बात बन गई और फिर तो कारसेवा में सैकड़ों हाथ जुट गए। उन्होंने गंदगी को उठाकर खेतों में डलवाया। इससे खेतों को उत्तम खाद मिलने लगी और फसल भी अच्छी होने लगी। सबमर्सिबल पम्पों द्वारा भूमि से पानी निकालने की गति जब कम हुई तो नदी का जलस्तर भी बढ़ने लगा। जब समाचार पत्रों में इसकी चर्चा हुई, तो

'गंगा पुत्र' के 'भगीरथी' प्रयास

मोक्षदायिनी गंगा के प्रदूषित जल की चिंता उन्हें चैन से नहीं बैठने देती। मन के अंदर गहरे तक बैठी आस्था, गंगा मैया को प्रदूषण मुक्त कराने के प्रयास में लगाए रहती है। इसके लिये वह जनजागरुकता के तहत पत्रक वितरण, पोस्टकार्ड भेजने से लेकर गोष्ठियां करने और लोगों को गंगा जल गंदा न करने के संकल्प दिलाने जैसे वह हर प्रयास करते हैं जो गंगा को प्रदूषण मुक्त कराने की दिशा में कारगर हो सके। उन्होंने बड़ी तादाद में बुद्धिजीवियों व सामाजिक संस्थाओं को गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के पक्ष में खड़ा किया है। ये हैं डॉ. ओ.एम. अग्रवाल की। उत्तर प्रदेश के बरेली शहर में रहने वाले 78 वर्षीय डॉ. अग्रवाल भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईवीआरआई) में प्रधान वैज्ञानिक रहे हैं। वह बताते हैं कि अप्रैल 2000 में हर की पौड़ी, हरिद्वार गए थे। वहां स्नान के दौरान गंदगी ने उन्हें झकझोर दिया। इसके बाद संकल्प लिया कि न तो स्वयं गंगा को गंदा करेंगे, न ही गंदा होने देंगे। बरेली लौटने पर वह गंगा बचाओ-देश बचाओ अभियान से जुड़ गए। इसके लिये उन्होंने मां गंगा बचाओ वेलफेयर सोसायटी का गठन किया और तब से 'गंगा को अविरल बहने दो-गंगा को निर्मल बहने दो' नारे के साथ जनजागरुकता अभियान चला रहे हैं। उन्होंने न सिर्फ बरेली बल्कि देश भर में हजारों लोगों को अपनी समिति का सदस्य बनाकर आंदोलन को आगे बढ़ाया है। वह सैकड़ों संगोष्ठियां कराकर उनमें 'गंगा बचाओ' का प्रस्ताव को मांग पत्र के रूप में प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति व मुख्यमंत्री को भेजते हैं। उन्होंने पचास हजार से ज्यादा पत्रक आम जनता के बीच खुद बंटवाए हैं- जिनमें गंगा को गंदा न करने की अपील की गई है। ❑

हजारों लोग इस पुण्य कार्य में योगदान देने लगे।

संत जी ने न केवल नदी को शुद्ध किया, बल्कि उसके पास के 160 कि.मी. लम्बे मार्ग का भी निर्माण कराया। किनारों पर फलदार पेड़ और सुन्दर सुगंधित फूलों के बाग लगवाए। उन्होंने पुराने घाटों की मरम्मत कराई और नए घाट बनवाए। नदी में नौकायन का प्रबंध कराया।, जिससे लोगों का आवागमन उस ओर खूब होने लगा। इससे उनकी प्रसिद्धि चहुं ओर फैल गई।

संत जी ने न केवल नदी को शुद्ध किया, बल्कि उसके पास के 160 कि.मी. लम्बे मार्ग का भी निर्माण कराया। किनारों पर फलदार पेड़ और सुन्दर सुगंधित फूलों के बाग लगवाए। उन्होंने पुराने घाटों की मरम्मत कराई और नए घाट बनवाए। नदी में नौकायन का प्रबंध कराया।, जिससे लोगों का आवागमन उस ओर खूब होने लगा।

होते-होते यह प्रसिद्धि तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम तक पहुंची। वे एक वैज्ञानिक होने के साथ ही पर्यावरण प्रेमी भी हैं। 17 अगस्त, 2006 को वे स्वयं इस प्रकल्प को देखने आए। उन्होंने देखा कि यदि एक व्यक्ति ही सत्संकल्प से काम करे, तो वह असम्भव को सम्भव कर सकता है। संत जी को पर्यावरण के क्षेत्र में अनेक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिले हैं; पर वे विनम्र भाव से इसे गुरु कृपा का प्रसाद ही मानते हैं। ❑

नदियों में प्रदूषण का कारण

❑ **डॉ. भरत झुनझुनवाला**

सुख प्राप्त करने के लिये मनुष्य को भौतिक तथा मानसिक पक्षों के बीच संतुलन स्थापित करना होता है। केवल वस्तुओं का भोग कोरा होता है। परन्तु भूखे पेट भजन भी नहीं होता है। सरकार की जिम्मेदारी है कि नीतियां बनाते समय दोनों पक्षों को बराबर महत्त्व दे। दुर्भाग्य है कि हमारी वर्तमान सरकार केवल भौतिक पक्ष को महत्त्व दे रही है। सरकार का पूरा ध्यान जनता को अधिकाधिक मात्रा में सस्ती बिजली, पानी और खाद्यान्न उपलब्ध कराना मात्र रह गया है। इस कार्य में जनता का भावनात्मक एवं सामाजिक विघटन होने के प्रति सरकार उदासीन है। कारण यह कि वस्तुओं के उत्पादन में कारपोरेट जगत से कमीशन खाने का अवसर मिलता है। जनता की भावनात्मक जरूरतों की पूर्ति में ठेके देने का अवसर नहीं है इसलिये सरकार ने मनुष्य को भोग की मशीन बना छोड़ा है। सरकार की इस दुर्नीति का उदाहरण गंगा, यमुना जैसी दूसरी नदियों में बढ़ रहा प्रदूषण है। नदी के प्रदूषण के दो बिंदू हैं- कूड़े को नदी में डालना एवं नदी में पानी की मात्रा का कम होना। पहले कूड़े को नदी में डालने पर विचार करते हैं। उद्योगों द्वारा कूड़े को सीधे नदी में डाल दिया जाता है। कूड़े को साफ करने के लिये प्रदूषण ट्रीटमेंट प्लांट लगाना होता है। हर उद्यमी माल का सस्ता उत्पादन करना चाहता है। अत: ट्रीटमेंट प्लांट को लगाना और चलाना घाटे का सौदा है। इससे उत्पादन लागत बढ़ जाती है।

जनता को सस्ता माल पहुंचाने हेतु अधिकारी एवं उद्यमी कूड़े को नदी में सीधे डाल रहे हैं। हल यह है कि माल के मूल्य में कुछ वृद्धि स्वीकार की जाए। साथ-साथ ट्रीटमेंट प्लांट चलाने के कार्य को केवल नियंत्रण बोर्ड पर न छोड़ा जाए। इस पर प्रदूषण टैक्स लगाना चाहिये। जितनी मात्रा में कूड़ा फैक्टरी द्वारा नदी में डाला जा रहा है, उस पर टैक्स वसूला जाए।

नदी में कूड़ा डालने का दूसरा स्रोत शहरी सीवरेज है। शहरों का आकार बढ़ता जा रहा है और तुलना में ट्रीटमेंट प्लांट छोटे हैं, इससे ज्यादा बड़ी समस्या है कि लगे हुए प्लांट को चलाने में नगरपालिकाओं की रुचि नहीं है। पर्यावरण मंत्रालय द्वारा नए प्लांट लगाने के लिये सैकड़ों करोड़ रुपये के अनुदान दिए जाते हैं। अधिकारियों के लिए नए प्लांट लगाना लाभप्रद होता है, चूंकि इसमें कमीशन मिलती है। परन्तु इन्हें चलाने में उनकी रुचि नहीं होती। प्रदूषण को नदी में बहाने से नागरिकों को अप्रत्यक्ष हानि होती है, जैसे कानपुर के सरसैया घाट पर अब नागरिक स्नान करने नहीं जाते हैं। गंगा में स्नान करने का सुख जाता रहा है। परन्तु नागरिकों को भोग चाहिये। वे चाहते हैं कि कपड़े, कूलर और पंखे पर नगर पालिका द्वारा टैक्स कम लगाया जाए इसलिये वे नगरपालिका पर ट्रीटमेंट प्लांट चलाने का दबाव नहीं डालते हैं। इस समस्या का हल है कि ट्रीटमेंट प्लांट को चलाना नगरपालिका के लिये लाभप्रद बना दिया जाए। जानकार बताते हैं कि शहर के सीवरेज से बिजली का उत्पादन किया जा सकता है। सीवरेज सड़ता है तो मीथेन गैस निकलती है। इससे टर्बाइन चलाई जा सकती है। मीथेन निकल जाने के बाद सीवरेज में प्रदूषण कम हो जाता है। समस्या का दूसरा बिंदू नदी में पानी की मात्रा का न्यून होना है। नदियों में तमाम लाभकारी कीटाणु होते हैं, जो प्रदूषण को खाकर पानी को साफ कर देते हैं नदी में डाला गया कूड़ा कचरा सड़ता है और ऑक्सीजन को सोख लेता है और लाभकारी कीटाणु समाप्त हो जाते हैं। पानी की मात्रा अधिक हो और कूड़ा कम हो तो कीटाणु जीवित रहेंगे और पानी को साफ कर देंगे। ❑

तिब्बत में चीन की मौजूदगी हिमालय के लिये घातक

भारत सरकार द्वारा पठानकोट से लेह रेलमार्ग की बार-बार अनदेखी राष्ट्रीय हितों के लिए खतरा हो सकती है। 31 मई को शिमला में पचंनद शोध संस्थान और फेडरिक नॉर्मन फाऊंडेशन के तत्वावधान में 'हिमालयीय पर्यावरण से छेड़छाड़ : भारत की सुरक्षा के लिए खतरा' विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी में स्वास्थ्य मंत्री राजीव बिंदल ने कहा कि चीन आए दिन भारत सीमा से सम्बंधित गलत आंकड़े प्रस्तुत कर रहा है किन्तु भारत की ओर से इसे रोकने के लिए जोरदार प्रयास होते नजर नहीं आ रहे हैं। ऐसे विषयों से निपटने के लिए आज प्रबल राजनीतिक इच्छा शक्ति, देशभक्त सरकार तथा कुशल नेतृत्व की आवश्यकता है। उन्होंने माना कि हिमाचल को आज हिमालयी पर्यावरण की रक्षा के लिए तिब्बत के साथ मजबूती से खड़ा होना होगा, सीमाओं को सशक्त करते हुए क्षेत्रीय जैव विविधता की भी रक्षा करनी होगी।

कार्यक्रम के मुख्यवक्ता सुदृप्त राय मुख्य सचिव हिमाचल प्रदेश ने कहा कि भारत की विभिन्न पर्वतमालाओं में से हिमालय पर्वतमाला काफी महत्व रखती है। विकास के नाम पर चीन ने संसाधनों का दुरुपयोग किया है, जिसका मूल्यांकन संभव नहीं। चीन की ओर से तिब्बत से निकलने वाली विभिन्न नदियों पर विशालकाय बांधों को बनाया जाना काफी खतरनाक है। वहीं दूसरी ओर ऐसी किसी स्थिति में चीन सरकार की ओर से भारत के प्रतिनिधियों का सहयोग न करना ओर भी खराब स्थिति को बढ़ावा देता है। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए इकोलॉजी बनाए रखते हुए आपदा प्रबंधन के उपाय करने जरूरी है। उन्होंने कहा कि ऐसे कई प्लान मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल जी के द्वारा राष्ट्रीय योजना आयोग में रखे गए हैं, जिसमें रेलवे लाईन, सड़कों का निर्माण सहित कई परियोजनाएं हैं जिससे हम किसी भी स्थिति का सामाना कर सकें। श्री राय ने कहा कि भारत वर्ष में हिमाचल की एक विकासवादी छाप है। अमर्त्य सैन पश्चिम बंगाल को हिमाचल प्रदेश बनाने का सपना देखते हैं। जो हिमाचल के लिए गर्व का विषय है। तिब्बत को वर्तमान स्थिति में युद्ध के माध्यम से तिब्बतियों को लौटाना चाहे बेशक भारत के लिए मुश्किल हो सकता है किन्तु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चीन पर दबाव तो बनाया जा सकता है।

तिब्बत निर्वासित सरकार की पार्टिलिमेंट इकाई के चेयरमैन तेंजिन नोरबू ने इस दौरान तिब्बत पर किए अपने शोध को लोगों के सम्मुख रखा। उन्होंने बताया कि तिब्बत को हथियाने के बाद चीन ने जिस तरह से वहां अंधाधुंध संसाधनों का इस्तेमाल किया है उससे वहां के पर्यावरण में काफी परिवर्तन हुए हैं। एशियन पठार में इसके कारण वर्षा जल पर प्रभाव पड़ रहा है। गलेशियर तेज गति से पिघल रहे हैं। साथ ही भूकंप की दृष्टि से अतिसंवेदनशील होने के कारण तिब्बत में पारछू जैसी कई कृत्रिम झीलें और बड़े-बड़े बांध भारत बंगलादेश सहित अन्य पड़ोसी देशों के लिए घातक बन सकते हैं। पूर्वी चीन के सूखे से निपटने के लिए तिब्बत की नदियों का रूख मोड़ा जा रहा है। तिब्बत में प्रतिवर्ष करोड़ों की संख्या में चीनी लोगों की माइग्रेशन हो रही है।

इस अवसर पर चमनलाल गुप्ता ने कहा कि देव संस्कृति का अनुसरण करने वाले भारतवासियों ने जहां पर्यावरण को देव देवी का रूप माना है आज वही पर्यावरण खतरे में है जिसका मुख्य कारण उस संस्कृति से लोगों का कटाव रहा है। वहीं विजय क्रांति ने कहा कि पर्यावरण केवल प्रकृति से ही सम्बंधित नहीं है। उसमें राजनीतिक, सामाजिक, सुरक्षा सम्बंधित कई पक्ष आते हैं। 1951 से चीन द्वारा कब्जे में लिए गए तिब्बत क्षेत्र का दुरुपयोग किया गया है उससे भारत की चिंताएं कई गुना बढ़ गई हैं। तिब्बत और भारत के हित आपस में मिल गए है और ऐसी स्थिति में हमें मिल कर काम करना होगा जिससे हिमाचल के पर्यावरण को पुन: सुरक्षित और शांत बनाया जा सके। ❑

विकास के नाम पर चीन ने संसाधनों का दुरुपयोग किया है, जिसका मूल्यांकन संभव नहीं। चीन की ओर से तिब्बत से निकलने वाली विभिन्न नदियों पर विशालकाय बांधों को बनाया जाना काफी खतरनाक है। वहीं दूसरी ओर ऐसी किसी स्थिति में चीन सरकार की ओर से भारत के प्रतिनिधियों का सहयोग न करना ओर भी खराब स्थिति को बढ़ावा देता है।

सीए, पत्रकार ले रहे संघ का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय वर्ष प्रशिक्षण शिविर में देश-विदेश के 1013 स्वयंसेवक शामिल हुए हैं। इनमें सीए, पत्रकार से लेकर विभिन्न क्षेत्रों के नौकरीपेशा शामिल हुए। रेशमबाग स्थित डॉ. हेडगेवार स्मृति भवन परिसर में प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ। प्रशिक्षण शिविर के सर्वाधिकारी डॉ. जयंती भाई भडेसिया ने पत्रकारों से चर्चा में कहा कि इस बार विदेशों से भी 7 स्वयंसेवक शामिल हुए थे। 14 मई से यह प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ था। शिविर सुबह साढ़े पांच बजे से रात 10 बजे तक चलता है। इसमें शारीरिक व बौद्धिक प्रशिक्षण दिया गया। इस बार पहली बार स्वयंसेवकों के लिये उम्र सीमा 40 वर्ष निर्धारित की गई थी। जम्मू कश्मीर से अंडमान तक व पूर्वोत्तर राज्यों से स्वयंसेवक शामिल हुए। 26 व 30 की उम्र के 308 स्वयंसेवकों ने और 21 से 25 वर्ष के 257 स्वयंसेवकों ने इस शिविर में भाग लिया। इनमें 5 डॉक्टर, 224 नौकरी पेशा, एक सीए, 12 अभियंता, 10 वकील, 192 शिक्षक, 90 किसान व 7 पत्रकार शामिल हुए। 78 प्रचारक भी इस शिविर में उपस्थित रहे। केरल से सर्वाधिक 94 स्वयंसेवक शामिल हुए। जम्मू से एकमात्र स्वयंसेवक जबकि विदर्भ से 21 स्वयंसेवक शामिल हुए। अमेरिका व नेपाल से 2-2 व मलेशिया से एक स्वयंसेवक शामिल हुआ। 11 जून की शाम को प्रशिक्षण शिविर का समापन हुआ।

सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने समापन पर सम्बोधित करते हुए कहा कि हिन्दुत्व की भावना और तद्नुसार आचरण न रखने वाले लोग ही स्वतंत्रता के बाहर देश के रणनीतिकार बने। इस कारण ही आज 66 वर्ष बाद भी गुलाम कश्मीर भारत में वापिस नहीं आ सका। भारत के विभाजन के लिये भी इसी मनोवृत्ति के नेताओं की करनी कारण बनी। इन नेताओं और शासनकर्ताओं को बुद्धि है, वे तर्क शुद्ध बात करते हैं, वे अर्थशास्त्र भी अच्छी तरह जानते हैं, लेकिन इस देश की एकता, अखंडता और समाज के पुरुषार्थ का विचार करने की हिन्दुत्व की भावना उनमें नहीं है। इस कारण ही बार-बार भारत से पराजित होने वालों को भी भारत को आंखें दिखाने की हिम्मत होती है। मुख्य अतिथि पंजाब केसरी के संचालक अश्विनी कुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिन्दू विचारधारा और राष्ट्रवाद की भावना ही देश को अखंड बनाए रख सकती है। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के काम की भी प्रशंसा की। ❑

दुर्गम क्षेत्र के बच्चे हुए जागरुक : कुलकर्णी

वनवासी कल्याण आश्रम शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार और आर्थिक ग्राम विकास के कार्यों में स्वरोजगार और सैल्फ हैल्प ग्रुप के माध्यम से समाज में जागरूकता और अनुशासित संगठन निर्माण का कार्य कर रहा है। यह वक्तव्य हिमगिरि कल्याण आश्रम के 27वें स्थापना दिवस पर अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के श्रद्धा जागरण प्रमुख सुरेश कुलकर्णी ने कहे। वह सोलन के शिल्ली स्थित वनवासी कल्याण आश्रम बाला साहब देशपांडे छात्रावास में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि छात्रावास के माध्यम से हिमाचल प्रदेश में शिक्षा, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता एवं परिवार तथा गांव में संस्कार व श्रद्धा जागरण का काम प्रशंसनीय है। साथ ही आर्थिक विकास सिलाई केंद्र व ग्राम के माध्यम से आदर्श गांवों की स्थापना हो रही है।

बच्चों ने इस स्थापना दिवस पर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। बच्चों ने लोक नृत्य और देशभक्तिपूर्ण गीतों से कार्यक्रम को सुशोभित किया। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शिमला विभाग के संघचालक अशोक ठाकुर ने आश्रम में रहने वाले दुर्गम क्षेत्र के बच्चों द्वारा पढ़ाई के साथ भारत की संस्कृति, धर्म, शिक्षा और समाज सेवा में रुचि एवं सहयोग की सराहना की। हिमगिरि कल्याण आश्रम के महासचिव निहाल चंद ने बताया कि प्रदेश में 4 बच्चों के माध्यम से 19 मई 1985 को संस्थान ने कार्य करना शुरू किया जो आज वट वृक्ष की तरह विस्तार कर रहा है। उन्होंने बताया कि आज लगभग 85 छात्र व 14 छात्राएं संस्थान के माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। प्रदेश के हर जिला व ग्राम स्तर पर समितियों का गठन किया गया है। इस दौरान प्रदेश भर से हिमगिरी कल्याण आश्रम और वनवासी कल्याण आश्रम के सदस्य कार्यक्रम में उपस्थित रहे। ❑

साम्प्रदायिक हिंसा विधेयक एवं मुस्लिम आरक्षण बहुसंख्यक विरोधी : सुब्रह्मण्यम

देश में आए दिन मुस्लिम आरक्षण के नाम पर हो रही राजनीति से मुकाबला करने के लिए डॉ. सुब्रह्मण्यम् स्वामी ने तीन सूत्रीय फार्मूला सुझाया है। 11 जून को शिमला में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुस्लिम आरक्षण और साम्प्रदायिक लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयक पर अपने विचार प्रकट करते हुए पूर्व केंद्रीय वाणिज्य, विधि एवं न्याय मंत्री डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी ने कहा मुस्लिम आरक्षण पर सरकार को करार जवाब देने की अभी तक हिन्दू समाज में कोई ठोस मंशा नजर नहीं आ रही है। डॉ. सुब्रह्मण्यम् स्वामी ने बताया कि देश के संविधान में आरक्षण का पैमाना मुस्लिम आरक्षण से मेल नहीं खाता है। आरक्षण केवल उन्हीं को मिलता रहा है जो लोग समाज के द्वारा उपेक्षा का शिकार हुए। **गरीबी कभी आरक्षण का कारण ही नहीं रही है। यदि ऐसा होता तो देश के गरीब ब्राह्मणों और राजपूतों को भी आरक्षण मिलता। साथ ही आरक्षण उन समुदायों को भी नहीं मिल सकता है जिन्होंने कभी समाज पर शासन किया हो।** मुस्लमानों ने देश पर 800 वर्ष और ईसाईयों ने 200 वर्ष भारतीयों पर शासन किया। वर्तमान में अल्पसंख्यक होने के नाते उन्हें केवल अपने शिक्षण संस्थान खोलने की स्वतंत्रता तथा ट्यूशन पढ़ने के लिए छात्रवृति मिल सकती है। उन्होंने कहा कि देश में आज ब्राह्मण और राजपूत भी गरीबी की रेखा से नीचे हैं और पिछड़ गए है किन्तु आज तक वह कभी आरक्षण की आवाज उठाते नहीं दिखे। वहीं दूसरी ओर हमारे देश पर वर्षों शासन कर हमें गुलाम बनाने के बाद भी यदि मुस्लिम और ईसाई अपनी कमियों से पिछड़ कर आज आरक्षण चाहते हैं तो वह बड़े शर्म की बात है। आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने अनुसूचित जाति और जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के आरक्षण में से 4.5 प्रतिशत मुस्लमानों को दिए जाने पर रोक लगाई है तो उसमें ऐसे ही कई महत्वपूर्ण तथ्य हैं।

डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी ने कहा कि इसी तरह साम्प्रदायिक लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयक भी देश के बहुसंख्यक हिन्दुओं के लिए एक बड़ा ही खतरा लेकर आया है जिसमें हिन्दू को प्रथम दृष्ट्या अपराधी मान लिया गया है और मुस्लमानों को देश के संसाधनों का पहला मालिक बना दिया है। इस विधेयक में ऐसे-ऐसे प्रावधान है कि हिन्दुओं की स्वतंत्रता ही दांव पर लग जाएगी। उन्होंने कहा कि हिन्दुवादी संगठनों द्वारा इस विधेयक का कठोर विरोध तथा संविधान में मौजूद प्रावधानो के चलते यह विधेयक कभी कानून नहीं बन सकता, किन्तु जिस मंशा के तहत यह विधेयक लाया गया है उसे माफ नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश में ऐसे ही कई विषय देखने को मिल रहे हैं जिसके माध्यम से हिन्दुओं को दबाने के प्रयास हो रहे है और यह कोई ओर कारण नहीं बल्कि मुस्लिम और चर्च आधारित मजहबी सोच का परिणाम है।

ऐसे निर्णयों के लिए देश के कम से कम 40 प्रतिशत हिन्दुओं को हिन्दुत्व निष्ठ पार्टी को जीता कर संसद में लाना चाहिए। तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कदम देशवासियों द्वारा संस्कृत भाषा का ज्ञान तथा उसमें वार्तालाप करना आना चाहिए। जिससे भाषाई आधार पर बंट रहा भारत एक बार पुन: एक सूत्र में बंध सके। संस्कृत का ज्ञान भीतर से भारतीयों का प्रक्षालन करेगा।

डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी ने कहा कि वर्तमान में जिस तरह देश के कोने-कोने में लोग भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़े हो रहे हैं वह बहुत अच्छा है किन्तु ऐसी मंशा को स्थाई आधार देने के लिए एक विराट हिन्दुत्व की स्थापना आवश्यक है। हिन्दुत्व ने कभी भी भ्रष्टाचार को स्वीकार नहीं किया है। यदि सीधे तौर पर कहें तो बीमारी यदि भ्रष्टाचार है तो उसका ईलाज हिन्दुत्व है। साथ ही उन्होंने बताया कि वह हिमाचल उच्च न्यायालय में 12 जनू को धर्मांतरण कानून के खिलाफ आई एक क्रिश्चयन सोसायटी की याचिका के खिलाफ उच्च न्यायालय में अपनी बात रखेंगे।

इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय अम्बेदकर पीठ के अध्यक्ष कुलदीप चंद अग्निहोत्री जी ने कहा कि साम्प्रदायिक लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयक हिन्दुओं को जरायमपेशा कौम के साबित साबित करता है। इस अवसर पर डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी के करकमलों से परिषद की मासिक पत्रिका हिमालय ध्वनि के नए अंक का विमोचन भी किया गया। ❑

सेवा भारती ने खोला हेल्पलाईन काउंटर

सेवा भारती की सोलन जिला इकाई ने डगशाई में हेल्पलाइन काउंटर खोला है। इसका शुभारम्भ सोलन अस्पताल के एम.एस. आर.के. बारिया ने किया। इस अवसर पर आर.के. बारिया ने कहा कि सेवा भारती हिमाचल में विभिन्न चिकित्सालयों में सहयोग दे रही है। उनहोंने कहा कि ऐसी संस्थाएं समाज में आगे आनी चाहिये। उन्होंने स्टाफ की तरफ से पूरी सहायता देने का आश्वासन दिया।

संस्था के अध्यक्ष गुलाब सिंह वर्मा ने कहा कि संस्था आईजीएमसी शिमला में रोगियों के सहायकों के लिये बिस्तरों का प्रबंध, रोगी वाहन, शव वाहन की व्यवस्था, मंडी चिकित्सालय में रोगियों के लिये नि:शुल्क दवाइयों की व्यवस्था, व्हील चेयर, बैसाखियां देती हैं। इसके अलावा ऊना, टांडा मेडिकल कॉलेज, देहरा चिकित्सालय में भी विभिन्न सेवा कार्य किये जा रहे हैं। इसी तरह की सेवाएं प्रदान करने के लिये सोलन में हेल्पलाइन काउंटर खोला गया है। काउंटर खोलने के बाद एक असहाय रोगी की इलाज करवाने में सहायता की गई व उसे आईजीएमसी शिमला में भी भर्ती करवाया गया। ❑

With best compliments from

MACLEODS

Macleods Pharmaceuticals Ltd.
Vill.- Theda, Khasuni lodhi Majra Rd,
Tehsil- Nalagarh, Distt. Solan,
Himachal Pradesh-174101
Tel No. 01795-661400

तम्बाकू पदार्थ उन्मूलन के लिये हिमाचल को मिला सर्वश्रेष्ठ राज्य का अवार्ड

हिमाचल प्रदेश को विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से तम्बाकू पदार्थ उन्मूलन के लिए सर्वश्रेष्ठ राज्य के अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह अवार्ड प्रदेश सरकार को राज्य में तम्बाकु तथा उसके उत्पादों के उपयोग में कमी लाने के लिए किए जा रहे सफल प्रयासों के लिए दिया गया है। 31 मई को दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश सरकार की ओर से प्रदेश स्वास्थ्य मंत्री राजीव बिंदल ने यह अवार्ड प्राप्त किया। राजीव बिंदल ने इस पुरस्कार को हिमाचल प्रदेश के लिए काफी महत्वपूर्ण माना है। उन्होंनें बताया कि यह पुरस्कार न केवल सरकार को प्रोत्साहित करने वाला है बल्कि देश भर में हिमाचल प्रदेशवासियों के सम्मान को बढ़ाने वाला है। ❑

हिमाचल में सस्ती दवा योजना ठप्प

हिमाचल में सस्ती दवाएं उपलब्ध करवाने की योजना ठप्प हो गई है। केन्द्र सरकार ने इन दवाओं की सप्लाई रोक दी है। राज्य के अस्पतालों में इन्हें उपलब्ध नहीं करवाया जा रहा है। राज्य सरकार ने केन्द्रीय एजेंसी बीपीपीआई की मदद से हिमाचल के अस्पतालों में भी सस्ती जेनेरिक दवाएं उपलब्ध करवाने की योजना संचालित की थी, लेकिन इसे अमलीजामा नहीं पहनाया जा सका है। इसमें 70 फीसदी से भी कम रेट पर दवाएं उपलब्ध की जानी थी। ❑

जंगलों से लाखों की जड़ी-बूटी गायब

छौहारा ब्लॉक के प्रतिबंधित जंगलों में वन विभाग के नियमों को ठेंगा दिखाकर जड़ी बूटी के तस्करों ने पहाड़ों की चोटियों को खोद कर तबाह कर दिया है। जंगलों से हर रोज लाखों की जड़ी बूटियां बाजार में पहुंच रही है। सतुआ या नाग छतरी के नाम से पाई जाने वाली महंगी बूटी को खोदने के लिये तस्करों ने जंगलों में नेपाली मजदूरों के कई दिनों से ठिकाने जमाए हुए हैं। औषधीय बूटी को सुखाने के बाद खरीददार एक हजार रुपये से 1500 रुपये प्रति किलो भाव चुका रहे हैं। हर रोज जंगलों से लाखों की जड़ी बूटी का दोहन किया जा रहा है। गैर प्रतिबंधित जंगलों में केवल स्थानीय लोगों को जड़ी बूटी खोदने का अधिकार है। जंगलों में दुर्लभ जड़ी बूटियों के अवैज्ञानिक दोहन से अन्य पौधों के अस्तित्व को भी खतरा है। ❑

दो करोड़ टन गेहूं के सड़ने की नौबत

केन्द्र और राज्य सरकारों की सुस्ती के कारण किसानों को अधिक अन्न उपजाने की सजा मिलने के आसार बनते दिखाई दे रहे हैं। खून-पसीना बहाकर पैदा किया अन्न अब किसान अपनी आंखों के सामने सड़ते देखेंगे। यही नहीं साढ़े आठ करोड़ टन से ज्यादा रिकॉर्डतोड़ फसल पैदा करने के बाद भी किसानों की जेब खाली रहेगी और गरीबों के पेट पहले की तरह ही भूखे। चूहों और कीड़े-मकोड़े खुले में सड़ता अनाज पहले जमकर छकेंगे और उसके बाद चांदी होगी तो शराब निर्माताओं की, क्योंकि किसानों के नाम पर कसमें खाने वाली सरकारों के पास उसकी फसल को रखने के इंतजाम ही नहीं हैं। इसके कारण दो करोड़ टन गेहूं बर्बाद होना तय है।

केन्द्रीय खाद्य मंत्री के.वी. थॉमस ने स्वीकार किया है कि अन्न की ज्यादा पैदावार और भंडारण क्षमता में भारी अंतर बन गया है। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों को खाद्यान्न भंडारण का अनुभव न होने से स्थितियां और खराब हो सकती है। अस्थायी व पक्के गोदामों में छंटाक भर अनाज रखने की जगह नहीं है। देश की बड़ी मंडियों में लाखों टन गेहूं खुले में जमा हो चुका है। उसे तिरपाल से ढकने की सुविधा नहीं है। एक जून तक 3.18 करोड़ टन गेहूं भंडारण का लक्ष्य है, लेकिन केन्द्र ने हाथ खड़े कर भंडारण की जिम्मेदारी गेहूं उत्पादक राज्यों पर डाल दी है। सरकारी गोदामों में अब तक 7.80 करोड़ टन खाद्यान्न जमा हो चुका है। इसमें 3.00 करोड़ टन चावल और बाकी 2.30 करोड़ टन गेहूं का स्टॉक है। उनमें पिछले सालों का लगभग 70 लाख टन पुराना अनाज भी भरा पड़ा है। देश में कुल 6.38 करोड़ टन खाद्यान्न भंडारण की क्षमता है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में रोजाना 10 लाख टन गेहूं की आवक हो रही है। मंत्रालय के अनुमान के मुताबिक मॉनसून की पहली बौछार के साथ ही बम्पर बर्बादी की शुरुआत हो जाएगी। जिन राज्यों ने जितना बढ़ चढ़कर बम्पर पैदावार की उन्हीं का अनाज सबसे ज्यादा सड़ेगा। पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्रियों ने पिछले दिनों प्रधानमंत्री, वित्त मंत्री, कृषि मंत्री और खाद्य मंत्री से मुलाकात कर मंडियों में खुले में पड़े अनाज को उठाने, गोदामों में जमा पुराने अनाज को दूसरे राज्यों में स्थानांतरित करने का आग्रह किया, लेकिन केन्द्र उल्टे उन्हीं से इंतजाम करने को कह रहा है। ❑

धर्मांतरण करने पर 11 मिशनरियों को कैद

कर्नाटक की कोलार स्थित अतिरिक्त जिला न्यायालय ने भोले-भाले लोगों को धर्मांतरण करने पर ईसाई मिशनरी से जुड़े 11 लोगों को कैद व 6-6 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है। इन दोषियों पर लोगों का धर्मांतरण करने के साथ-साथ हिन्दू देवी-देवताओं के खिलाफ दुष्प्रचार करने के आरोप भी साबित हुए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार, रोड्रेक्स, एसएम बाबू, पी. विजय कुमार, जैसिंथा, पी. सैमुअल, एलीजाबेथ, एस. जैक्लाईन, पी. शैला, जयशिला, आर.एलन, मोसेस नामक ईसाई मिशनरी से जुड़े दोषियों ने कोलार जिले के क्यासंबली गांव में कुछ लोगों का जबरन धर्म परिवर्तन करवाने का प्रयास किया। इन लोगों ने गांव में सार्वजनिक स्थलों पर कुछ पैम्फलेट भी बांटे जिसमें भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण व त्रिरुपति बाला जी के बारे अपमानजनक शब्दावली का प्रयोग किया गया था। ❑

मुसलमानों के लिये कोटा खारिज

केन्द्र सरकार को झटका देते हुए आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट ने ओबीसी कोटा के तहत अल्पसंख्यकों को 4.5 फीसदी आरक्षण देने का प्रस्ताव खारिज कर दिया है। अदालत ने कहा कि सरकार का यह फैसला केवल धर्म के आधार पर है, इसकी दूसरी कोई वजह नहीं है।

हाईकोर्ट के इस फैसले से आईआईटी जैसे शिक्षण संस्थानों में इस कोटा के तहत हो चुके दाखिले भी प्रभावित हो सकते हैं। केन्द्र ने 27 फीसदी ओबीसी कोटे के तहत ही अल्पसंख्यकों को नौकरियों और केन्द्रीय शिक्षण संस्थानों में 4.5 फीसदी सब कोटा का प्रावधान किया था। एक याचिका पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने अल्पसंख्यकों को आरक्षण देने के मामले में बेहद ढीला रवैया अपनाने के लिये केन्द्र की खिंचाई भी की। जस्टिस मदन बी लोकुर और जस्टिस संयज कुमार की पीठ ने कहा कि कोटा देने से सम्बंधित गत दिसम्बर में जारी ऑफिस मेमोरेंडम धर्म पर आधारित है।

सुप्रीम कोर्ट ने भी 13 जून को केन्द्र सरकार के मंसूबों पर पानी फेरते हुए अल्पसंख्यक आरक्षण रद्द करने के आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट के आदेश पर रोक लगाने से मना कर दिया। कोर्ट के इन्कार से न सिर्फ इस कोटे में चयनित आईआईटी के 325 अल्पसंख्यक छात्र लाभ पाने से वंचित हो गए हैं, बल्कि इंजीनियरिंग, मेडिकल सहित सभी केन्द्रीय उच्च शिक्षण संस्थानों में अल्पसंख्यक आरक्षण का मामला लटक गया है। ❑

पानी के लिये तरसाएगी सरकार

भारत के आम नागरिक के लिये नि:शुल्क एवं शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिये अभियान चला रही संस्था 'जलाधिकार' के तत्वावधान में नोएडा में गत दिनों नागरिक सम्मेलन आयोजित किया गया। जलाधिकार संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोपाल अग्रवाल ने इस पूरे अभियान की परिकल्पना को स्पष्ट करते हुए बताया कि मनुष्य मात्र का जीवन जल पर पूरी तरह अवलम्बित है। पर देश की सरकार के पास पानी के संरक्षण, वितरण एवं प्रबंधन की कोई स्पष्ट नीति नहीं है। नागरिकों को प्रचुर मात्रा में शुद्ध पेयजल प्राप्त हो, इसके लिये एक समग्र जलनीति की अत्यंत आवश्यकता है। दुर्भाग्य से औद्योगिक एवं व्यावसायिक घरानों के हित साधने हेतु केन्द्र सरकार एक जनविरोधी नीति के द्वारा देश में उपलब्ध जल संसाधनों का निजीकरण करने की चेष्टा कर रही है। इस नीति के लागू हो जाने से आम नागरिक का देश के जल संसाधनों पर से अधिकार पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा और सभी जल के स्रोत व्यापारिक घरानों के हाथ में सिमटकर रह जाएंगे। सरकार और निजी कम्पनियां यह भ्रामक प्रचार कर रही हैं कि देश में पेयजल की भारी कमी है। सच तो यह है कि देश में प्रकृति द्वारा प्रदत्त जल स्रोतों का प्रबंधन यदि वैज्ञानिक ढंग से किया जाए तो सन् 2050 तक देश में पानी की कोई कमी नहीं होगी। परन्तु सरकार पेयजल की उपलब्धता का रोना रोकर निजी कम्पनियों के हाथ में जल स्रोतों को बेच देना चाहती है ताकि निजी कम्पनियां मनमाने तरीके से पानी का धंधा कर सकें। ऐसा होने से आम जनता को पानी पर भारी शुल्क चुकाने के लिये मजबूर होना पड़ेगा। दक्षिण अफ्रीका में आम नागरिकों ने वहां की सरकार द्वारा जल स्रोतों का निजीकरण पूरी तरह नकार दिया। इलटी में भी जनादेश द्वारा आम नागरिकों ने जल वितरण के क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनी के प्रवेश पर पूरी तरह से रोक लगा दिया। पर भारत, जिस देश में 65 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा से नीचे रहते हैं तथा जो लोग दो जून की रोटी को भी तरसते हैं उन पर पानी के मूल्य का बोझ डालना न केवल अनैतिक है बल्कि अमानवीय भी है। जलाधिकार के महामंत्री श्री कैलाश गोदुका ने जल के निजीकरण का विरोध करते हुए जल के स्रोतों का संवर्द्धन करने के कई प्राचीन तरीकों का सुझाव दिया। ❑

With best compliments from

Ambuja Cement

संस्कारहीन शिक्षा पद्धति को बदला जाए

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संघ शिक्षा वर्ग द्वितीय वर्ष का समापन समारोह

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा परम्परा के अन्तर्गत संघ शिक्षा वर्ग द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण शिविर नई दिल्ली में रोहिणी स्थित महाराजा अग्रसेन तकनीकी संस्थान में 27 मई से प्रारम्भ किया गया। इस शिविर का समापन समारोह 16 जून को सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण में कुल 179 शिक्षार्थी, 17 शिक्षकों एवं 44 प्रबन्धकों ने हिस्सा लिया। प्रशिक्षण शिविर में तीन दिन संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत जी भी उपस्थित रहे। समारोह का मुख्य आकर्षण संघ शिक्षा वर्ग में सम्मिलित शिक्षार्थियों द्वारा प्रस्तुत शारीरिक प्रदर्शन की झांकी रही। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख श्री भागय्या जी थे। अपने उदबोधन में श्री भागय्या जी ने कहा कि मानवता की शिक्षा ही हिन्दुत्व है। हमारे देश में भाषा और ज्ञान का विकास तो खूब हुआ किन्तु जीवन मूल्यों की शिक्षा नहीं दी गई जिससे समाज में परस्पर सामंजस्य का अभाव दिखाई देता है। किन्तु अभी भी हमारे देश की कई माताएं अपने बेटों को संस्कार और जीवन मूल्य सिखाती हैं। इसीलिए भारत अभी भी जिन्दा है। ❑

घूमती कलम

पाकिस्तान में हिन्दुओं की दुर्दशा

❑ सुभाष चंद्र सूद

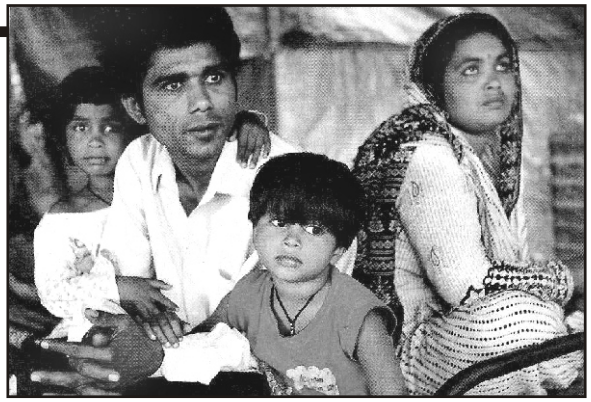

अंग्रेजों की 'बांटो और राज करो' की छद्म कूटनीति, मुस्लिम लीग की अलगाववादी जिहादी आतंकी कार्यवाहियों एवं तत्कालीन कांग्रेस नेतृत्व के ढुलमुल, कमजोर दिशाहीन नीतियों के कारण 1947 में धर्म के आधार पर देश का विभाजन कर दिया गया। पंथ निरपेक्ष हिन्दुस्तान सहिष्णु लोकतांत्रिक गणतंत्र बना, मजहबी इस्लामिक पाकिस्तान असहिष्णु तानाशाही की ओर बढ़ा। दोनों देशों ने अपने यहां रह रहे हिन्दू-मुसलमानों के सम्मान, सुरक्षा का वचन दिया। हिन्दुस्तान में रह रही मुस्लिम आबादी 1947 से 20 प्रतिशत से बढ़कर 30 प्रतिशत हो गई। यहां मुस्लिम राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, मुख्य न्यायाधीश गवर्नर, मुख्यमंत्री, उद्योगपति बन कर उन्हें आगे बढ़ने के सामान अवसर मिले। पाकिस्तान में 1947 में शेष रह गए 24 प्रतिशत हिन्दुओं में से आज केवल वहां 2 प्रतिशत ही शेष रह गए, काफी लोग देश पलायन कर गए, कुछ मर गए अधिकांश ने जिन्दा रहने हेतु मजबूरन इस्लाम स्वीकार कर लिया। पाकिस्तान में सभी अल्पसंख्यक आज डर, हत्या एवं जबरन धर्म मतांतरण के वातावरण में जी रहे हैं।

अभी हाल ही में पाकिस्तान में तीन नाबालिग हिन्दू लड़कियों के अपहरण एवं जबरन मुस्लिम धर्मांतरण का मामला सुर्खियों में रहा। रिंकल कुमारी, लता कुमारी और आशा कुमारी नामक ये हिन्दू लड़कियां अलग-अलग घटनाओं में मुस्लिम गुंडों द्वारा उठा ली गई थी। उन्हें आतंकित कर इनके परिवारजनों के सफाये का डर दिखाकर इनको मुसलमान बनाकर निकाह कर लिया गया। बाद में पाकिस्तानी मानवाधिकार आयोग के सहयोग से तीनों के परिवारजन, मामले को सुप्रीम कोर्ट में ले गए। वहां मुख्य न्यायाधीश इफ्तिखार मोहम्मद चौधरी ने निर्णय दिया कि ये लड़कियां अपनी मर्जी से कहीं भी मुस्लिम पति अथवा हिन्दू माता-पिता के पास जाने को स्वतंत्र हैं। हिन्दुओं को लगा अब शायद उनकी बेटियां उन्हें वापिस मिल जाएंगी। पर ये क्या, कोर्ट के रजिस्ट्रार ने जो स्वयं मुस्लिम ही है, हिन्दुओं के सामने घोषणा कर दी कि लड़कियों ने अपने अपहरणकर्ता मुस्लिम खाविंदो के साथ जाने के लिये रजामंदी दी है लिहाजा उन्हें उनके साथ भेज दिया गया है। हिन्दू यह सुनकर सन्न रह गए। पाकिस्तानी मानवाधिकार आयोग ने भी इस अपारदर्शी प्रक्रिया एवं अपहरणकर्ताओं के बलात् खौफ की तस्दीक की है। पाकिस्तान पीपल्स पार्टी (पीपीपी) के एक विधायक मियां अब्दुल हक उर्फ मियां मिठो की संदिग्ध भूमिका इस वलात् अपहरणों एवं धर्मान्तरणों में सवालों के घेरे में है।

एक स्वतंत्र देश के रूप में जन्म लेने की छह दशकों बाद भी पाकिस्तान में अल्पसंख्यक हिन्दू अपने सम्मान एवं अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। 1947 में खींची गई सरहद के उस पार, हिन्दुओं की न तो जिन्दगी सुरक्षित है नां ही उनकी सम्पत्ति उनकी बहू-बेटियों का बराबर अपहरण, फिरौती एवं बलात्कार कर उन्हें जबरन धर्म परिवर्तन कर उनकी मर्जी के खिलाफ स्थानीय मुसलमानों से विवाह करने हेतु बाध्य किया जाता है। वहां का प्रशासन, राजनीतिक पार्टियां एवं मुल्ले-मौलवी सभी इसका परोक्ष समर्थन करते हैं। पाकिस्तान में हिन्दुओं की मदद हेतु एक सामाजिक संगठन 'पाकिस्तान हिन्दू सेवा' का अनुमान है कि केवल पिछले 10 महीनों में ही 400 हिन्दू परिवार देश छोड़कर भारत आने को मजबूर हुए हैं। सारे विश्व में मानवाधिकार का ढोल पिटने वाली भारत सरकार उनके सेकूलर रहनुमाओं ने औपचारिक ढंग से कभी पाकिस्तान सरकार के समक्ष इस मानवीय त्रासदी को गम्भीरता से नहीं उठाया। **इस देश में पाकिस्तानी हिन्दू परिवारों की पीड़ा, राजनीतिक मुद्दा इसलिये नहीं बन सकी है क्योंकि वह चुनावों में जीत नहीं दिलाती, विडम्बना तो यह है कि भारत के बहुसंख्यक हिन्दू समुदाय के एक वर्ग की समस्या जैसे कोई मानवीय शोक समस्या ही नहीं है यहां तो केवल थोक मुस्लिम वोटों एवं उनके सामाजिक, आर्थिक हितों की ही चिंता है।** ❑

कम्युनिस्टों का असली चेहरा

अभी हाल ही में केरल के इडुक्की जिला माकपा अध्यक्ष और राज्य कमेटी के सदस्य एम.एम. मणि की यह सार्वजनिक स्वीकारोक्ति कि 'मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी अपने विरोधियों की संगठित हत्याएं करवाती रही है, कम्युनिस्टों की विचारधारा और कार्यशैली पर से वास्तविक नकाब उतारती है। उनका कहना है कि 'पार्टी में विद्रोही नेताओं की हत्याएं करना एक परम्परा रही है।' मणि की खुलेआम एक रैली में इस स्वीकारोक्ति को होश खो देने वाला बयान बताकर खारिज नहीं किया जा सकता है क्योंकि मणि ने अपने मरने-मारने वाले बयान के बाद उसके समर्थन में उदाहरण देकर उसे सही भी ठहराया और कहा कि 'पार्टी को उन हत्याओं की जिम्मेदारी लेने में कोई गुरेज भी नहीं है जो उसने करवाई है।' उन्होंने सरेआम ऐलान किया जो भी पार्टी के खिलाफ काम करेगा उसे रास्ते से हटा दिया जाएगा। मणि के मुताबिक माकपा ने 1982 में तेरह विद्रोही नेताओं की सूची बनाई थी जिन्हें समाप्त करना था। इस सूची में से एक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। दूसरे की सरेआम पीट-पीट कर हत्या कर दी गई और तीसरे शख्स को तो चाकुओं से गोदकर मार डाला गया। आरोपों के अनुसार कत्ल किये गए दो लोग कांग्रेस के कार्यकर्ता थे और एक भाजपा का कार्यकर्ता था। इन हत्यारों के आरोप भी सीपीएम पर लगे थे लेकिन चूंकि प्रशासन सीपीएम का था इसलिए पड़ताल कहां तक पहुंची इसका पता ही नहीं चल पाया।

मणि के इस सार्वजनिक बयान पर समस्त देश में राजनीतिक भूचाल आ गया। केरल माकपा सचिव पी. विजयन ने सफाई दी कि मणि ने ऐसा सार्वजनिक बयान देकर गलत किया है। गौर करने लायक है कि विजय ने मणि के बयान को गलत नहीं ठहराया बल्कि सार्वजनिक रूप से बयान देने को गलत करार दिया। मणि के इस बयान और विजयन की सफाई को केरल में हाल ही में माकपा छोड़कर अपनी पार्टी बनाने वाले टीपी चंद्रशेखरन की हत्या से जोड़कर भी देखा जाने लगा है पार्टी उन्हें दलबदलू और विश्वासघाती मानती थी। मणि कोई छोटे-मोटे नेता नहीं है वे पच्चीस साल से ज्यादा पार्टी जिला अध्यक्ष एवं राज्य कमेटी के मेम्बर रहे हैं।

माकपा आज भी स्टालिन और माओ को अपना प्रेरणा पुरुष मानती है जिसके माथे इसके ढाई करोड़ और चीन के दसियों करोड़ लोगों की हत्याओं का काला कलंक है। अभी भी पार्टी कार्यालयों में इनके चित्र लगे दिखाई पड़ते हैं। पिछले सौ सालों से रूस चीन और पूर्वी यूरोप के लोमहर्षक, दिल दहला देने वाले अनुभवों के बावजूद कम्यूनिज्म की काली किताब को सदैव गुलाबी और रूमानी दिखाया जाता है। जिन हत्याओं ने केवल कब्जा बनाए रखने के लिए लोक लुभावने नारो और करोड़ों निर्दोष जनता की निर्मम हत्याएं की उन्हीं को समय बीतने के साथ कुछ भूलों के सिवा बेहतर जनवादी जनता का संघर्ष आदि बताया जाता है। भारत में यह छल और दोहरा व्यवहार सेकूलर बुद्धिजीवी और विदेशी प्रेस, मीडिया करता है जो संघ परिवार को हराने, नीचा दिखने हेतु इस लाल परिवार के जघन्य अत्यचारों पर भी होठ सिले रखता है।

पिछले वर्ष जून से अगस्त में बंगाल मीडिया प्रेस में 'कंकाल कांड' की बड़ी चर्चा रही। अनेक माकपा नेताओं के घरों से (जिनमें बुद्धदेव भट्टाचार्य के तत्कालीन मंत्री सुशांत घोष और सांसद लक्ष्मण सेठ शामिल है)नरकंकाल मिले हैं जिनकी डीएनए जांच के बाद उसमें तृणमूल कांग्रेस के एक समर्थक का कंकाल भी पाया गया। तब सुशांत घोष गिरफ्तार होकर जेल पहुंच गए उनके 16 नेता और कार्यकर्ता भी बंद हुए कई फरार हैं जिनपर चार्जशीट दाखिल है। **वास्तव में कम्युनिज्म का असली चेहरा वर्ग संघर्ष द्वारा अपने विरोधियों एवं विपरीत विचारधाराओं को हिंसा से समाप्त करने का इतिहास रहा है। बंगाल एवं केरल में इन्होंने इसी विचार एवं कार्यशैली को अपना कर हजारों कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, भाजपा एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं की सार्वजनिक क्रूर हत्याएं की हैं जिनकी जांच की जानी शेष है।**

बंगाल में इनके लम्बे शासन को, इनके हम सफर सेकूलर बुद्धिजीवी एवं प्रेस मीडिया के एक वर्ग ने वहां माकपा के कुशल प्रशासन, भूमि सुधारों एवं तथाकथित जनवादी कार्यों को महिमा मंडित कर, माकपा के असहिष्णु, विरोधियों को हिंसक माध्यमों से समाप्त करने की पार्टी नीति को योजनाबद्ध ढंग से छुपाया है। प्रत्येक छोटे-मोटे विषय पर संघ परिवार को पानी पीने पी-पी कर कोसने वाले आज सेकूलर मीडिया एवं बुद्धिजीवी, कम्युनिज्म द्वारा प्रेरित देश के 8 प्रदेशों में नासूर की तरह बढ़ रहे भयानक नकसलवाद पर लाल परिवार की इस अवैध संतान पर चुप्पी क्यों साधे है? ❑

- सुभाष चंद्र सूद

अपनी अंधेरी जिन्दगी में जलाया सफलता का दीया

ऑरबिट संस्था का नाम तो आपने सुना होगा यह संस्था भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल) को बायलर में लगने वाले पिन एवं शिकंजे बनाकर देती है, भेल से इसका अनुबंध है। तमिलनाडु के त्रिची के पास इसका एक कारखाना है। इस कारखाने में काम करने वाले सभी लोग दृष्टिहीन हैं यहां तक कि कारखाने के मुखिया पीआर पांदी भी दृष्टिहीन हैं। इन लोगों ने अपनी अंधेरी जिन्दगी में कामयाबी की रोशनी का दीया जला लिया है। स्कूलों एवं संस्थाओं में दृष्टिहीनों के काम करने की बात तो सुनी है किन्तु किसी वस्तु के उत्पाद वाले कारखाने में मशीनों पर दृष्टिहीनों के काम करने की बात सुनकर हैरानी होना स्वाभाविक है। किन्तु यह बिल्कुल सच है। इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड के पॉवर प्लांट के लिये भी ऑरबिट बॉयलर सप्लाई करती है। इंडियन ऑयल कारपोरेशन के मुख्य परियोजना प्रबंधक श्री अरविंद 29 दिसम्बर, 2011 को तिरुचिरापल्ली (भेल के अनुर्बंधित कारखाने आरबिट) गए तो उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वहां सभी दृष्टिहीन लोग कार्यरत हैं। उन्होंने अपनी आंखों से दृष्टिहीनों को मशीनों पर काम करते, कच्चा माल छांटते, उसे आगे पहुंचाते, बेल्डिंग करते, तैयार पुर्जों को अलग करते, उनकी गुणवत्ता जांचते एवं पैकिंग करते स्वयं देखा। उन्होंने यह भी देखा कि सभी लोग मिलजुल कर काम करते हैं तथा एक-दूसरे की सहायता करते हैं। श्री अरविंद ने तैयार पुर्जों की गुणवत्ताकी जांच करवाई तो उनमें कहीं कोई कमी नहीं मिली। पूछने पर उन्हें जानकारी मिली कि वहां काम करने वाले सभी कर्मचारी कारखाने के नक्शे को अपने कदमों से नापे हुए हैं तथा वे आंखें नहीं होते हुए भी समय एवं गति के आधार पर पूरी कुशलता के साथ ठीक उसी प्रकार काम करते हैं जैसे नजर वाले करते हैं। कारखाने के मुखिया से उनकी बात हुई उसमें भी उन्हें कहीं कोई कमी महसूस नहीं हुई। मुखिया ने उनसे अंत में एक निवेदन किया कि 'यदि आपको कोई अक्षम व्यक्ति मिले तो हमारे पास ले आना हम उसे हमारी टीम में शामिल कर उसे सक्षम बना लेंगे।' ❑

इस कारखाने में काम करने वाले सभी लोग दृष्टिहीन हैं यहां तक कि कारखाने के मुखिया पीआर पांदी भी दृष्टिहीन हैं। स्कूलों एवं संस्थाओं में दृष्टिहीनों के काम करने की बात तो सुनी है किन्तु किसी वस्तु के उत्पाद वाले कारखाने में मशीनों पर दृष्टिहीनों के काम करने की बात सुनकर हैरानी होना स्वाभाविक है।

मजदूरी करने वाला युवक बना आईएएस अफसर

शायद ही किसी ने सोचा होगा कि अकाल राहत कार्यों में मजदूरी करने वाला बच्चा एक दिन खुद अकाल राहत की जांच-पड़ताल करेगा, लेकिन यूपीएससी परीक्षा में 110वीं रैंक हासिल करने वाले हुक्मरान ने यह कर दिखाया। वे बताते हैं, 'एक अकाल राहत कार्यस्थल पर मैं मजदूरी कर रहा था, वहां कुछ अधिकारी जांच-पड़ताल करने आए पता चला कि ये लोग अपनी रिपोर्ट सबसे बड़े अधिकारी कलेक्टर को देंगे। उसी दिन सोच लिया कि अब कलेक्टर ही बनना है।'

नागौर जिले के छोटे-से गांव भेरूंदा के निवासी हुक्माराम के पिता अस्थमा के रोगी थे इसलिए परिवार की जिम्मेदारी बचपन से उनके कंधों पर आ गई। वे स्कूल जाते थे, खेत सम्भालते थे और गर्मियों की छुट्टियों में मजदूरी करते थे, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। 12वीं के बाद इग्नू से घर बैठे कॉलेज की पढ़ाई पूरी की। साथ में गांव के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना भी शुरू किया। फिर वर्धमान ओपन यूनिवर्सिटी से एमएससी की। दूसरी श्रेणी की शिक्षक भर्ती परीक्षा में हुक्माराम का चयन हो गया लेकिन उनका लक्ष्य तो आईएएस अफसर बनना था। तैयारी के

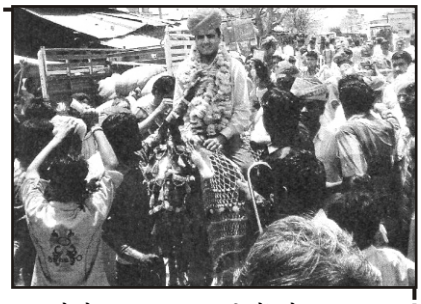

लिये वे सालभर दिल्ली में रहे। हुक्माराम कहते हैं, 'लक्ष्य को पाने के लिये ईमानदारी के साथ मेहनत करना जरूरी है।' हुक्माराम के आईएएस अफसर बनने की खबर आसपास के गांवों में आग की तरह फैली। सबने मिलकर उनके सम्मान में जुलूस निकाला। आखिर गांव का पहला आईएएस अफसर बनना कोई छोटी बात नहीं की। ❑

इंगलिश मीडिया का अत्याचार

इस समय भारत में दो करोड़ बच्चे ऐसे हैं जो अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ रहे हैं। आठ साल पहले इनकी संख्या मुश्किल से 60-65 लाख थी। इस अंग्रेजी प्रेम की व्याख्या आप कैसे करेंगे?अपने बच्चों को लोग अंग्रेजी-माध्यम के स्कूलों में क्यों ठेल रहे हैं। किसी भी विषय को यदि आप किसी विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ें तो क्या आप उसे ज्यादा आसानी से सीख लेते हैं या उसे क्या आप ज्यादा जल्दी सीख लेते हैं?क्या अंग्रेजी आपके बच्चों को अधिक संस्कारवान या बेहतर इंसान बनाती है?जिन देशों के बच्चे विदेशी भाषा अंग्रेजी या अन्य के माध्यम से पढ़ते हैं क्या वे देश बहुत सम्पन्न और महाशक्ति बन जाते हैं?

इन सब प्रश्नों का उत्तर नकारात्मक है। **विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ने पर बच्चों का दिमाग कमजोर हो जाता है। उनका ध्यान विषय सीखने में जितना लगता है, उससे ज्यादा विदेशी भाषा से निपटने में बर्बाद होता है। वे रट्टू तोते बन जाते हैं। उनकी मौलिकता घट जाती है या नष्ट हो जाती है। उन्हें अनेक मानसिक बीमारियां हो जाती हैं। यदि वे ही विषय उन्हें उनकी मातृभाषा में पढ़ाए जाएं तो वे उन्हें बहुत जल्दी सीखते हैं।** दुनिया के किसी भी मालदार और शक्तिशाली देश के बच्चों को विदेशी भाषा के माध्यम से नहीं पढ़ाया जाता। सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्य अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस और चीन पर यह बात लागू होती है। जर्मनी, जापान, स्वीडन, ब्राजील आदि देश भी अपने बच्चों को अपनी भाषाओं के माध्यम से पढ़ाते हैं। सिर्फ अंग्रेजों के पूर्व गुलाम देशों-भारत और पाक जैसे में विदेशी भाषा का माध्यम चलता है।

यह बच्चों पर होने वाला सबसे कठोर और सूक्ष्म अत्याचार है। इस पर तुरंत प्रतिबंध लगना चाहिये। यह हमारे बच्चों को पश्चिम का नकलची और पिछलग्गू बनाने का अदृश्य षड्यंत्र है। अंग्रेज़ी माध्यम से चलने वाले स्कूल शिक्षा के केन्द्र नहीं हैं, यह अंधाधुंध मुनाफा लूटनेवाली दुकानें हैं। यह सब जानते हुए भी लोग अपना पेट काटकर अपने बच्चों को इसलिए इन स्कूलों में भेजते हैं कि वे सरकारी नौकरियां आसानी से हथिया सकें। यदि समस्त नौकरियों से अंग्रेजी की अनिवार्यता हटा ली जाए तो कौन मूर्ख माता-पिता होंगे, जो अपने हिरणों पर घास लादेंगे? **- डॉ. वेद प्रताप वैदिक**

कोशिश रहे कि एक दाना भी खराब न हो

हमारे पास अनाज के भंडारण की पर्याप्त सुविधा नहीं है, हमें उनके विकल्पों पर सोचना चाहिये।

भारत में कुपोषण से मरने वाले बच्चों की संख्या दुनिया में सबसे अधिक हो गई है। भूख से त्रस्त 81 देशों की वैश्विक सूचि में भारत 67वें स्थान पर पहुंच गया है। इस लज्जाजनक स्थिति के साथ ही देश के गोदामों में लगभग 640 लाख टन अनाज रखा है। इस वर्ष लगभग 170 लाख टन और आने वाला है, जबकि सरकार की भंडारण क्षमता केवल 450 लाख टन की है। एक अनुमान के अनुसार देश में लगभग 60 हजार करोड़ रुपयों का अनाज नष्ट हो जाता है।

हम कोशिश करें तो यह समस्या हल भी हो सकती है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली द्वारा एक महीने का राशन दिया जाता है। इसे एक महीने की बजाए छह महीने का एक साथ देने का निर्णय किया जाए। सरकार के गोदामों में एक किलो अनाज छह महीने तक रखने में लगभग 2.40 रुपये प्रति किलो खर्च आता है। छह महीने का अनाज इकट्ठा देने से लगभग 157 लाख टन भंडारण क्षमता खाली हो जाएगी। यदि प्रारम्भ में आधे भी इकट्ठा अनाज उठा लें, तो भी सरकार के पास 80 लाख टन की जगह खाली हो जाएगी। सरकार की करोड़ों की बचत होगी। इसलिये छह महीने का अनाज इकट्ठा लेने वालों को अनाज दो रुपये किलो सस्ता दे दिया जाए। इससे फिर भी 40 पैसे प्रति किलो सरकार के भी बच जाएंगे। दो रुपये किलो सस्ता अनाज आम गरीब आदमी के लिये एक बहुत बड़ी राहत होगी।

यह भी हो सकता है कि किसानों से अनाज लेते समय उनसे एक समझौता किया जाए, जिसके तहत उन्हें आधा मूल्य दे दिया जाए और अनाज उन्हीं के पास रहने दिया जाए और सरकार आवश्यकता पड़ने पर यह अनाज उठाए। एक क्विंटल अनाज रखने का सरकार का एक वर्ष में 480 रुपये खर्च आता है। यह अनाज किसान से लेते समय इतना धन किसान को अतिरिक्त दे दिया जाए। जितने भी किसान इस योजना को स्वीकारेंगे, उतनी ही भंडारण क्षमता सरकार के पास खाली हो जाएगी। कोई अतिरिक्त धन खर्च नहीं करना पड़ेगा। किसान को 480 रुपये प्रति क्विंटल और अधिक मिल जाएगा। ❑

शांता कुमार, पूर्व केंद्रीय खाद्य मंत्री

तीन जून, दो हजार ग्यारह

तीन जून, दो हजार ग्यारह को,
रामलीला मैदान में जो हुआ,
क्या हुआ, क्यों हुआ, कैसे हुआ,
अब तक पता नहीं चला,
कौन-सा था स्वार्थ,

जो खींच कर ले गया/पांच वरिष्ठ मंत्रियों को,
एयर पोर्ट पर, मिलने के लिए उनसे
बाबा को लगा पहुंचे ये उन्हें सिर आंखों पर बिठाने
पर मांगा सहयोग अपने धंधे में
समझे नहीं जा फंसे प्रशासन के शिकंजे में
करें बाबा विश्वासघात का दोषारोपण,
और दुष्प्रचार काले धन, भ्रष्टाचार का,
बर्दाश्त करे सरकार कैसे।

आधी रात के अंधेरे में उनका हाथ,
जो रहा नहीं आम आदमी के साथ,
उठ गया शिविर में योग-निद्राग्रस्त
हजारों मासूम स्त्री-पुरुषों बच्चों की भीड़ पर।
लाठियां बरसी, गोलियां चली, आग लगी या क्या हुआ
कौन मरा, कौन घायल हुआ, जाने पुलिस या प्रशासन
या जानें उच्चतम न्यायमूर्ति,
जिन्होंने स्वत: संज्ञान लिया इस दु:खद घटना का

सरकार गम्भीर थी कहने लगी–
मृतकों के परिवारों को या फरियादी घायलों को,
दिया भारी मन से मुआवजा हमने,
व्यक्त करते हुए हार्दिक सहानुभूति।
जो कर सकते थे किया हमने,
हां की हां, न की न रही, बात बढ़ानी क्या,
दिल को लगानी क्या।

दूध का दूध क्या, पानी का पानी क्या?

– **रामकृष्ण कौशल**, सांकली शिमला

खामोश हैं, मजबूर हैं!

उन्होंने आंगन में बोये हैं बारूद
यकीनन शेष अवशेष न होगा,
मुझे फिक्र है–
मेरी दीवार भी हिलेगी,
मुश्किलें पैदा करेगी,
गर्म राख, हवा के साथ
मेरे आशियाने को भी खाक करेगी।
उनके बेकसूर जनाजे से
मेरा दिल भी रो दिया
कितनी लाशें कफनों से लिपटी
जीवन को कपड़ा कम हो गया
उस सीने में उठता दर्द
मेरे सीने का गम हो गया।
कसूर था किसका?
किसकी थी खता?
मिली क्यों आखिर
मौत की सजा?
महकता था घर आंगन जिनसे
आज उनका ठिकाना कब्रिस्तान हो गया।
खुशहाल जिन्दगी, बदतर बन गई,
मौत के साये में जिन्दगी डर गई
कांप उठी अपनों की रूह
खौफ पैदा करना जिन्दगी में
किसी मजहब का ईमान नहीं होता
गुले-गुलज़ार गुलशन को मिटाना
कभी खुदा का पैगाम नहीं होता।
आबाद होना जिन्दगी है
बर्बादी को, कभी सलाम नहीं होता।
कितने कत्लेआम हो रहे हैं,
अश्कों से दामन भीग रहे हैं
मौत का तांडव नचाने वाले
खुदा से खुद कितना दूर हो रहे हैं?
हैरान हूं, खुदा भी क्यों?
खामोश है, मजबूर है।

– **सविता मेहता**, चढ़गांव

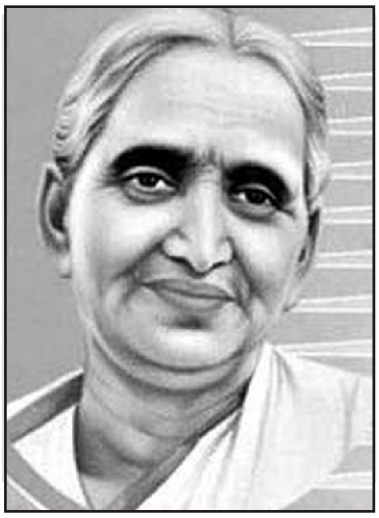

नारी जागरण की अग्रदूत लक्ष्मीबाई केलकर

बंगाल विभाजन के विरुद्ध हो रहे आंदोलन के दिनों में 6 जुलाई, 1905 को नागपुर में कमल नामक बालिका का जन्म हुआ। तब किसे पता था कि भविष्य में यह बालिका नारी जागरण के एक महान् संगठन का निर्माण करेगी।

कमल के घर में देशभक्ति का वातावरण था। उसकी मां जब लोकमान्य तिलक का अखबार 'केसरी' पढ़ती थीं, तो कमल भी गौर से उसे सुनती थी। केसरी के तेजस्वी विचारों से प्रभावित होकर उसने निश्चय किया कि वह दहेज रहित विवाह करेगी। इस जिद के कारण उसका विवाह 14 वर्ष की अवस्था में वर्धा के एक विधुर वकील पुरुषोत्तमराव केलकर से हुआ, जो दो पुत्रियों के पिता थे। विवाह के बाद उसका नाम लक्ष्मीबाई हो गया।

अगले 12 वर्ष में लक्ष्मीबाई ने छह पुत्रों को जन्म दिया। वे एक आदर्श व जागरुक गृहिणी थी। मायके से प्राप्त संस्कारों को उन्होंने गृहस्थ जीवन में पूर्णत: पालन किया। उनके घर में स्वदेशी वस्तुएं ही आती थीं। अपनी कन्याओं के लिये वे घर पर एक शिक्षक बुलाती थीं। वहीं से उनके मन में कन्या शिक्षा की भावना जन्मी और उन्होंने एक बालिका विद्यालय खोल दिया। रूढ़िग्रस्त समाज से टक्कर लेकर उन्होंने घर में हरिजन नौकर रखे। गांधी जी की प्रेरणा से उन्होंने घर में चरखा मंगाया। एक बार जब गांधी जी ने एक सभा में दान की अपील की, तो लक्ष्मीबाई ने अपनी सोने की जंजीर ही दान कर दी।

1932 में उनके पति का देहांत हो गया। अब अपने बच्चों के साथ बाल विधवा ननद का दायित्व भी उन पर आ गया। लक्ष्मीबाई ने घर के दो कमरे किराये पर उठा दिये। इससे आर्थिक समस्या कुछ हल हुई। इन्हीं दिनों उनके बेटों ने संघ की शाखा पर जाना शुरू किया। उनके विचार और व्यवहार में आए परिवर्तन से लक्ष्मीबाई के मन में संघ के प्रति आकर्षण जगा और उन्होंने संघ के संस्थापक डा. हेडगेवार से भेंट की। डॉ. हेडगेवार ने उन्हें बताया कि संघ में स्त्रियां नहीं आतीं। तब उन्होंने 1936 में स्त्रियों के लिये 'राष्ट्र सेविका समिति' नामक एक नया संगठन प्रारम्भ किया। समिति के कार्यविस्तार के साथ ही लक्ष्मीबाई ने नारियों के हृदय में श्रद्धा का स्थान बना लिया। सब उन्हें 'वंदनीया मौसीजी' कहने लगे। आगामी दस साल के निरंतर प्रवास से समिति के कार्य का अनेक प्रांतों में विस्तार हुआ।

डॉ. हेडगेवार ने उन्हें बताया कि संघ में स्त्रियां नहीं आतीं। तब उन्होंने 1936 में स्त्रियों के लिये 'राष्ट्र सेविका समिति' नामक एक नया संगठन प्रारम्भ किया। समिति के कार्यविस्तार के साथ ही लक्ष्मीबाई ने नारियों के हृदय में श्रद्धा का स्थान बना लिया। सब उन्हें 'वंदनीया मौसीजी' कहने लगे। आगामी दस साल के निरंतर प्रवास से समिति के कार्य का अनेक प्रांतों में विस्तार हुआ।

1945 में समिति का पहला राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। देश की स्वतंत्रता एवं विभाजन से एक दिन पूर्व वे कराची, सिंध में थीं। उन्होंने सेविकाओं से हर परिस्थिति का मुकाबला करना और अपनी पवित्रता बनाए रखने को कहा। उन्होंने हिन्दू परिवारों के सुरक्षित भारत पहुंचने के प्रबंध भी किये।

मौसीजी स्त्रियों के लिये जीजाबाई के मातृत्व, अहल्याबाई के कर्तृत्व तथा लक्ष्मीबाई के नेतृत्व को आदर्श मानती थीं। उन्होंने अपने जीवनकाल में बाल मंदिर, भजन मंडली, योगाभ्यास केंद्र, बालिका छात्रावास आदि अनेक प्रकल्प प्रारम्भ किये। वे रामयाण पर बहुत सुन्दर प्रवचन देती थीं। उनसे होने वाली आय से उन्होंने अनेक स्थानों पर समिति के कार्यालय बनवाए।

27 नवम्बर, 1978 को नारी जागरण की अग्रदूत वन्दनीया मौसीजी का देहांत हुआ। उन द्वारा स्थापित राष्ट्र सेविका समिति आज विश्व के 25 से भी अधिक देशों में सक्रिय है। ❑

भारतीय 'करी' संक्रमण शोधक

वैज्ञानिकों ने माना है कि भारतीय करी खाने वालों की रोग से लड़ने की क्षमता अधिक होती है और ऐसे लोग संक्रमण से दूर रहते हैं। अमेरिका की ऑरेगन स्टेट यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने पाया है कि हल्दी में कपरुमिन नाम का तत्व अधिक मात्रा में होता है, इससे शरीर के रोग से लड़ने की क्षमता में बढ़ोतरी होती है। भारतीय करी में हल्दी का इस्तेमाल काफी होता है, इसलिये उसे खाने से संक्रमण पास नहीं फटकते।

कैंसर से लड़ने वाला प्रोटीन

कैंसर के इलाज में प्रतिरक्षा चिकित्सा बहुत सफल नहीं हुई है। जैसे-जैसे ट्यूमर बढ़ता है वह ठोस बॉल की तरह हो जाता है। प्रतिरक्षा कोशिकाओं के लिये उसके अंदर घुसना बहुत मुश्किल होता है। अब वैज्ञानिकों ने एक ऐसा प्रोटीन बनाने का दावा किया है जो कैंसर ट्यूमर के अंदर घुसकर शरीर की प्रतिरक्षा कोशिकाओं को कैंसर कोशिकाओं से लड़ने में मदद करता है।

डायबिटीज की जांच

वैज्ञानिकों ने एक विशेष प्रकार का कांटेक्ट लेंस तैयार किया है जो आपके आंसुओं से शुगर के स्तर की सही जानकारी देगा। इस तकनीक के बाद लोगों को बार-बार जांच के लिये खून देने की भी जरूरत नहीं रहेगी। ओहियो में एकरान यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अनुसार शरीर में शर्करा का पाचन अगर सही तरीके से नहीं हो रहा है और शर्करा की मात्रा शरीर में बढ़ती जा रही है तो इस कांटेक्ट लेंस का रंग बदल जाएगा।

हर फल कुछ कहता है!

फलों का सेवन आप कभी भी कर सकते हैं और स्वस्थ भी रह सकते हैं। गर्मियों में मिलने वाले कुछ ऐसे फल हैं जो न केवल गर्मी से निजात दिलाते हैं, बल्कि सेहत के लिहाज से भी अच्छे होते हैं। आइए ऐसे ही कुछ सेहतमंद फलों के बारे में जानते हैं–

तरबूज : गर्मियों में जहां हमारे शरीर में पानी की कमी हो जाती है, तो तरबूज लाभदायक होता है। तरबूज में विटामिन भरपूर होते हैं और इससे मोटापा भी कम होता है। खाना खाने के बाद तरबूज के सेवन से खाना जल्दी पच जाता है। यहां तक कि बुखार होने पर भी इसका सेवन कर सकते हैं।

पपीता : पपीते में मौजूद विटामिन ए के सेवन से रतौंधी नहीं होती और आंखों की रोशनी ठीक रहती है। पपीते में बीटा कैरोटीन, विटामिन, फाइबर और पोटैशियम भी पाया जाता है। गर्मियों में पपीता खाने से पेट की समस्याएं नहीं होती। पपीते के सेवन से रक्त साफ रहता है और महिलाओं के लिये भी यह फल अच्छा है।

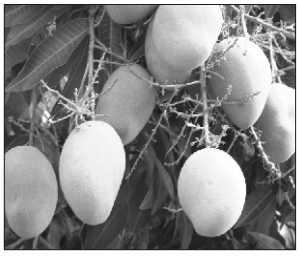

आम : आम का स्वाद तो हमें अच्छा लगता ही है लेकिन बहुत कम लोग इसमें मौजूद पोषक तत्वों के बारे में जानते हैं। सिर्फ एक आम में प्रचुर मात्रा में विटामिन-सी, पोटैशियम, लोहा और बीटा कैरोटीन पाए जाते हैं। आम में फाइबर भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं।

सेब : कब्ज दूर करने, कॉलेस्ट्रॉल कम करने, कैंसर की रोकथाम और डायबिटीज के मरीजों के लिये भी सेब एक फायदेमंद फल माना गया है।

खुबानी : खुबानी में विटामिन-ए, विटामिन सी, फाइबर, ट्रिप्टोयफन और पोटैशियम पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। खुबानी को सलाद के रूप में भी खा सकते हैं। आंखों की रोशनी बढ़ाने में यह फल काफी फायदेमंद है।

हरी सब्जियों के भीतर क्या है?

❑ पंकज चतुर्वेदी

हमारे देश में हर साल कोई दस हजार करोड़ रुपये के कृषि उत्पाद खेत या भंडार-गृहों में कीटों के कारण नष्ट हो जाते हैं। इस बरबादी से बचने के लिये कीटनाशकों का इस्तेमला बढ़ा है। वर्ष 1950 में जहां इसकी खपत 2,000 टन थी, आज कोई 90 हजार टन कीटनाशक देश के पर्यावरण में घुल-मिल रहे हैं। ये कीटनाशक जाने-अनजाने पानी, मिट्टी, हवा, जन-स्वास्थ्य और जैव विविधता को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं। इसका असर खाद्य श्रृंखला पर पड़ रहा है और उनमें दवाओं तथा रसायनों की मात्रा खतरनाक स्तर पर आ गई है।

कर्नाटक के मलनाड इलाके में 1969-70 के आसपास बड़ा अजीब रोग फैला। लकवे से मिलते-जुलते इस रोग के शिकार गरीब मजदूर थे। शुरू में उनकी पिंडलियों और घुटने के जोड़ों में दर्द हुआ, फिर रोगी खड़े होने लायक भी नहीं रह गए। वर्ष 1975 में राष्ट्रीय पोषण संस्थान हैदराबाद ने चेताया था कि एंडमिक एमिलियन आर्थराइटिस ऑफ मलनाड नामक इस बीमारी का कारण ऐसे धान के खेतों में पैदा हुई मछली और केकड़े खाना है, जहां कीटनाशकों का इस्तेमाल हुआ हो। इसके बावजूद वहां खेतों में पैराथिया और एल्ड्रिन का बेतहाशा इस्तेमाल जारी है, जबकि बीमारी एक हजार से अधिक गांव में फैल चुकी है।

दिल्ली, मथुरा, आगरा जैसे शहरों में पेयजल आपूर्ति के मुख्य स्रोत यमुना नदी के पानी में डीडीटी और बीएसजी की मात्रा जानलेवा स्तर पर पहुंच गई है। यहां उपलब्ध शाकाहारी और मांसाहारी दोनों किस्म की खाद्य सामग्री में इन कीटनाशकों की खासी मात्रा पाई गई है। औसत भारतीय के दैनिक भोजन में लगभग 0.27 मिलीग्राम डीडीटी पाई जाती है।

उधर, पंजाब में कपास की फसल पर सफेद मक्खियों के लाइलाज हमले का मुख्य कारण रासायनिक कीटनाशकों का इस्तेमाल किया जाना पाया गया है। अब टमाटर को ही लें। इन दिनों अच्छी प्रजाति के 'रुपाली' और 'रश्मि' किस्म के टमाटरों का सर्वाधिक प्रचलन है। इन प्रजातियों को सर्वाधिक नुकसान हेल्योशिस आर्मिजरा नामक कीड़े से होता है। टमाटर में सूराख करने वाले इन कीड़ों के कारण आधी फसल बेकार हो जाती है। इन कीड़ों को मारने के लिए बाजार में जो दवाएं मिलती हैं, उन पर लिखा होता है कि इनका इस्तेमाल एक फसल पर चार-पांच बार से अधिक न किया जाए, लेकिन यह वैज्ञानिक चेतावनी बहुत महीन अक्षरों में और अंग्रेजी में दर्ज होती है, जिसे पढ़ना व समझना आम किसानों के बस से बाहर की बात है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ओपी लाल ने अपने शोध में पाया है कि इन दवाओं से उपचारित लाल लाल सुंदर टमाटर खाने से मस्तिष्क, पाचन अंगों, किडनी, छाती व स्नायु तंत्रों पर बुरा असर पड़ता है। भिंडी और बैंगन देखने में तो बेहद आकर्षक हैं, लेकिन खाने में उतनी ही कातिल! बैंगन को चमकदार बनाने के लिये उसे फोल्डिज नामक रसायन में डुबोया जाता है। बैंगन में घोल को चूसने की अधिक क्षमता होती है, जिससे फोल्डिज की बड़ी मात्रा बैंगन जज्ब कर लेते हैं। इसी प्रकार भिंडी को छेद करने वाले कीड़ों से बचाने के लिये जिस दवा का छिड़काव किया जाता है, वह मानव शरीर के लिये घातक है। ❑

जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ाने की सस्ती जैविक विधि

वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध हुआ है कि आजकल 0.6 से 0.8 प्रतिशत ऑर्गेनिक कार्बन से युक्त खेती फिलहाल 0.2 से 0.4 प्रतिशत तक के स्तर पर आ पहुंची है। इसके कारण फसलों की गुणवत्तायुक्त पैदावार में तो निरंतर गिरावट आई ही है, साथ ही मानव, पशु व अन्य जीवधारियों की सेहत पर भी दुष्प्रभाव, दुधारू पशुओं में दूध क्षमता की कमी, बांझपन व बार-बार फिरने जैसी समस्यांए बढ़ रही हैं। इस समस्या के समाधान के लिये विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने किसानों के घरों, गलियों, सड़कों व अन्य सामाजिक जगहों पर उपलब्ध गोबर, कूड़े-कचरे से ही जैविक खाद बनाने का आसान, सस्ता व बेहतरीन तरीका बताया है।

इस विधि के अनुसार गोबर, कूड़े आदि को एक ढेर में इकट्ठा करके इसे चारों ओर से किनारों को आधा से एक फुट तक ऊंचा उठाकर प्याली या कटोरीनुमा आकार बना लें। इस ढेर पर पानी डालकर पूरी तरह से तर-बतर करके काले पॉलीथीन से इस प्रकार ढकें कि अंदर की हवा बाहर न आए और बाहर की हवा अंदर न जा पाए। पॉलीथीन कहीं से कटा-फटा नहीं होना चाहिये। डेढ़-दो महीने इस ढेर को ढंका रहने दें। इस प्रकार थोड़ी सी मेहनत, कार्यकुशलता व सावधनी बरतने से कम समय में कृषि भूमि के लिये सस्ती व प्रभावशाली खाद तैयार हो जाती है। इस खाद से किसानों को बिना कुछ खर्च किये अपने ही गांव में फसलों के लिये सस्ती जैविक खाद उपलब्ध हो जाएगी। ❑

वाटर हारवेस्टिंग में युवाओं के लिये कैरियर

❑ कृष्ण मुरारी

विश्व भर में पेयजल की कमी एक संकट बन कर उभर रही है। पृथ्वी के भीतर का जल स्तर दिनों दिन कम होता जा रहा है। मॉनसून से जो वर्षाजल आता है वह बह कर समुद्र में मिल जाता है। ऐसे वर्षा जल का संचयन और उसका पुनर्भरण आवश्यक है, ताकि भूमिगत जल संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल हो सके।

प्राप्त जानकारी के अनुसार अकेले भारत में ही व्यवहार्य भूमिगत जल भंडारण का आकलन 218 बिलियन घन मीटर के रूप में किया गया है जिसमें से 160 बिलियन घन मीटर को दोबारा से प्राप्त किया जा सकता है। इस समस्या का एक समाधान जल संचयन है।

भारत में ऐसी कई गैर सरकारी और सरकारी संस्थाएं हैं जो वाटर शेड मैनेजमेंट पर कार्य कर रही हैं साथ ही युवाओं के लिए एक बेहतर कैरियर के रूप में उभर रही है। ऐसी स्थित को देखते हुए युवाओं को वाटर शेड मैनेजमेंट का ज्ञान होना आवश्यक है। इसके लिए कई विश्वविद्यालय अपने स्तर पर कोर्सों को चला रहे हैं।

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में एक अरसे से लोग पारम्परिक तरीकों से वर्षा जल संचयन का कार्य करते आ रहे है। इसमें मुख्य तौर पर खेतों की सिंचाई के लिए तलाबों का निर्माण करना शामिल है। इन परम्परागत तरीकों का ही परिणाम है कि भारत के वह रेगिस्तानी और पहाड़ी राज्य जहां पर खेती करनी नामुमकिन थी वहां भी आज खेत लहलहाते नजर आते हैं। साथ ही पशु पक्षियों के लिए भी वह जल उपलब्ध रहता रहा है।

बदलती परिस्थितियों के अनुसार जहां आज गांवों की संख्या कम होती जा रही है और शहरी आबादी बढ़ रही है। उसके देखते हुए शहरों में भी वर्षा जल संचयन के विषय को गंभीरता से लिया जा रहा है। भवनों में मॉनसून के दौरान पड़ने वाले वर्षा जल का संचयन कर आगामी भवन निर्माण के लिए तथा दैनिक जरूरतों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे न केवल वर्षा जल का बेहतरीन इस्तेमाल किया जा सकता है बल्कि भूमिगत जल का भी संरक्षण किया जा सकता है जो अधिकतर बिना मॉनसून के दिनों में काम आता है।

भारत में ऐसी कई गैर सरकारी और सरकारी संस्थाएं हैं जो वाटर शेड मैनेजमेंट पर कार्य कर रही हैं साथ ही युवाओं के लिए एक बेहतर कैरियर के रूप में उभर रही है। ऐसी स्थित को देखते हुए युवाओं को वाटर शेड मैनेजमेंट का ज्ञान होना आवश्यक है। इसके लिए कई विश्वविद्यालय अपने स्तर पर कोर्सों को चला रहे हैं। साथ ही दूरस्थ शिक्षा केंद्रों जैसे इग्नो से आप 6 माह का सर्टिफिकेट कोर्स कर सकते हैं। कोर्स के दौरान विद्यार्थियों को वाटर मैनेजमेंट की तमाम बारीकियां बताई जाती हैं। चेन्नई स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास के माध्यम से भी इससे सम्बंधित कोर्स कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त हैदराबाद स्थित नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट के सेंटर फॉर ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट पर भी नजर डाली जा सकती है। जहां परम्परागत वाटर हारवेस्टिंग के तरीके, समुदाय आधारित पेयजल, शौचालय आदि से सम्बंधित विभिन्न नीतियों के निर्धारण से सम्बंधित काम किए जा सकते हैं। ❑

बिना बिजली के चलाए फ्रिज

अहमदाबाद के आई.आई.एम. में आयोजित प्रतियोगिता में 35 कॉलेजों के करीब 5 हजार छात्रों ने इनोवेशन प्रदर्शित किये जिसमें आई.आई.टी. कानपुर की चारू शर्मा ने विकलांगों के लिये बैटरी से चलती व्हील चेयर बनाई है जिसकी लागत सिर्फ 3000 रुपये है। इसे सिर्फ एक जॉयस्टिक की मदद से चलाया जा सकता है। यह व्हील चेयर सीढ़ी भी चढ़ सकती है। गुजरात के मयंक पटेल, विरेन पटेल व चिंतन पटेल जो एलसीआईटी, महेसाणा के छात्र हैं इन्होंने बिना बिजली की मदद के एल.पी.जी. गैस से चलने वाला फ्रिज बनाया है, जो वस्तु को अधिक समय के लिये ठंडा बनाए रखता है। गांधी नगर आई.आई.टी. के छात्र केशव ने अगरबत्ती बनाने की मशीन बनाई है। इससे अगरबत्ती के गृह उद्योग के कर्मचारियों को काफी आराम रहेगा। हाथ से अगरबत्ती बनाने से हाथ छिल जाते हैं तथा कमर भी दर्द करने लगती है। इस मशीन से इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। यह मशीन एक दिन में 6,000 तक अगरबत्ती का उत्पादन करती है। ❑

मत बांधो बाबा अमरनाथ की यात्रा को

❑ विनोद बंसल

भारत के मुकुट जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर शहर से 125 किलोमीटर दूर हिमालय की बर्फीली चोटियों के बीच 13,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित भगवान शिव का अद्‌भुत ज्योतिर्लिंग बाबा अमरनाथ के नाम से विश्व भर में प्रसिद्ध है। यह सिर्फ करोड़ों हिन्दुओं की आस्था का केन्द्र ही नहीं बल्कि पूरे भारत वर्ष को एकसूत्र में पिरो कर रखने का एक प्रमुख आधार स्तम्भ भी है। भारत तो क्या विश्व का शायद ही कोई कोना ऐसा होगा जहां से श्रद्धालु बाबा के दर्शन करने न आते हों। इस यात्रा से जहां बाबा के भक्त अपनी मन मांगी मुराद पूरी कर ले जाते हैं वहीं कश्मीर क्षेत्र में रहने वाली जनता इससे वर्ष भर की अपनी रोजी रोटी का जुगाड़ कर लेते हैं। इतना ही नहीं वहां की अर्थव्यवस्था का आधार पर्यटन है जिसको बढ़ावा देने हेतु सरकार करोड़ों रुपए खर्च करती है किन्तु इस दो महीने की यात्रा से उसे बैठे बिठाए लाखों पर्यटक मिल जाते हैं जिससे करोड़ों की आय राज्यकोष में जमा होती है। अत्यंत दुर्गम रास्ता, खराब मौसम और आतंकवादियों की धमकियों व हमलों के चलते यात्रा में अनेक बार व्यवधान पड़ता रहता है। अलगाववादियों के इशारों पर चलने वाले राजनेता तथा कुछ विघटनकारी तत्व इस पवित्र यात्रा को समाप्त करने के तरह-तरह के षड्‌यंत्र रचते रहते हैं। कभी खराब मौसम का बहाना, कभी आतंकवादियों की धमकी, कभी व्यवस्था का प्रश्न तो कभी आस्था पर हमला। बस यूं ही चलता रहता है इसे सीमित दायरे में बांधने या इसे समाप्त करने का कुत्सित प्रयास। गत अनेक वर्षों से इस यात्रा को ज्येष्ठ पूर्णिमा से प्रारम्भ कर श्रावण पूर्णिमा (रक्षा बंधन) के दिन को पूर्ण किया जाता रहा है। हर साल बाबा का प्रसाद पाने के इच्छुक भक्त निरंतर बढ़ते ही जा रहे हैं। इसी कारण गत वर्ष का यह आंकड़ा 8,00,000 को पार कर गया। यात्रा का समय चाहे पूरा हो गया हो किन्तु भक्तों की चाहत बढ़ती ही चली गई। बाबा के भक्तों का यह आंकड़ा इस बार भी किसी कीर्तिमान से कम नहीं दिख रहा है। इस सबके बावजूद इस वर्ष की यात्रा की अवधि को मनमाने तरीके से घटाकर 39 दिन कर दिया गया है जिसे किसी भी तरह से तर्क संगत नहीं कहा जा सकता है।

हर साल बाबा का प्रसाद पाने के इच्छुक भक्त निरंतर बढ़ते ही जा रहे हैं। इसी कारण गत वर्ष का यह आंकड़ा 8,00,000 को पार कर गया। यात्रा का समय चाहे पूरा हो गया हो किन्तु भक्तों की चाहत बढ़ती ही चली गई। बाबा के भक्तों का यह आंकड़ा इस बार भी किसी कीर्तिमान से कम नहीं दिख रहा है। इस सबके बावजूद इस वर्ष की यात्रा की अवधि को मनमाने तरीके से घटाकर 39 दिन कर दिया गया है जिसे किसी भी तरह से तर्क संगत नहीं कहा जा सकता है।

विहिप के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया ने बड़े ही तीखे अंदाज़ में कहा कि जब जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री यात्रा को पूरे दो महीने रखने को राजी होकर सुरक्षा देने पर सहमत हैं तो राज्यपाल श्री एनएन वोहरा के क्या बाप की यात्रा है जो इसे डेढ़ माह तक सीमित कर रहे हैं। राज्यपाल के पिछले हिन्दू विरोधी रवैये पर भी उन्होंने कहा कि बाबा अमरनाथ की जमीन भी इसी व्यक्ति ने हमसे छीनी थी जिसे हिन्दुओं द्वारा दो माह तक संघर्ष कर वापिस लिया गया। हमने ऐलान कर दिया है कि कि यह यात्रा पूर्व की तरह ज्येष्ठ पूर्णिमा से ही प्रारम्भ होगी जिसे रोकने का यदि किसी ने प्रयास किया तो हम देशभर में लोकतांत्रिक तरीके से व्यापक आंदोलन चलाएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि व्यापक जन भावनाओं से जुड़ा यह आंदोलन यदि हिंसक हुआ तो इसकी सारी जिम्मेदारी राज्यपाल वोहरा और केन्द्र सरकार की होगी। अंत में यही कहा जा सकता है कि देश की एकता, अखण्डता, धार्मिक आस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये इस यात्रा को प्रोत्साहित करने में ही सबकी भलाई है। वैसे भी, जहां एक ओर हमारी केन्द्र व राज्य सरकारें हर राज्य में जगह-जगह हज यात्रा हेतु हज हॉउस बनाकर करोड़ों रुपये की हज सबसीडी दे रही है तो क्या हिन्दुओं को अपने ही देश में स्वयं के ही पैसे से बिना किसी सरकारी सहायता के अपने आराध्य के दर्शनों की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए? दूसरी बात यह भी है कि क्या ईद व क्रिसमस जैसे त्योहारों की तिथि कोई राज्यपाल तय करता है जो जम्मू कश्मीर के राज्यपाल हमारी इस पवित्र यात्रा की तिथि तय कर रहे हैं। हां! श्राइन बोर्ड के अध्यक्ष के नाते यात्रा के सुचारू रूप से चलने हेतु जो प्रबंध आवश्यक है, वे उन्हें करने चाहिये। किन्तु यात्रा की अविध तो संत समाज व हिन्दू संस्थाएं ही तय कर सकती हैं। ❑

दूध देती रहे तो माता, नहीं तो कुमाता

❑ डॉ. विनोद कुमार

गाय 'गो' धातु से निकला शब्द है। 'गो' शब्द तीन अर्थों में उपनिषदों के अनुसार प्रयुक्त होता है। सूर्य का प्रकाश जो सात रंगों से बना है... के संदर्भ में 'गो' शब्द प्रयुक्त होता है। 'गुरु' जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए... के रूप में भी यह शब्द व्यवहार में आता है। गाय के लिए भी यही प्रयोग किया जाता है। इन तीन अर्थों में इसके गुण प्रधान हैं। प्राचीन काल से भारत के लोगों के जनमानस में गाय के प्रति सर्वोच्च श्रद्धा का भाव रहा है। इसे राष्ट्र की महान धरोहर, लौकिक जीवन का आधार तथा मुक्ति मार्ग की सहयोगिनी माना गया है। ऋग्वेद में गाय को समस्त संसार की माता कहा गया है। ऋग्वेद में कहा गया है कि हम परस्पर वैसे ही प्रेम करे जैसे गाय अपने बछड़े से करती है। अथर्ववेद में गाय के शरीर में समस्त देवताओं का वास माना गया है। उसके विभिन्न अंगों में उनके वास को दर्शाया गया है। जन्म, विवाह तथा मृत्यु पर इसका महत्व दर्शाया गया है। गाय भारतीय जीवन का अभिन्न अंग है। इसका इतना गुणगान शायद इसके गुणों के कारण अधिक हुआ है। गाय के बारे में कहा जाता था 'गाय मरी तो बचता कौन, गाय बची तो मरता कौन?' गाय का दूध कई व्याधियों को नष्ट करता है। गाय ही एक ऐसा पशु है जो श्वास व नि:श्वास में शत प्रतिशत ऑक्सीजन विसर्जन करती है। इसका घी कोलेस्ट्रॉल निरोधक है। अन्य सबके घी से कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है। इसके मल मूत्र में औषधीय गुण हैं। इसलिए इसे चलता फिरता चिकित्सालय भी कहते हैं। पारसी धर्म के प्रवर्तक जरथ्रुस्त ने अहुतावेंती गाथा में गाय पर अत्याचार की आलोचना की है। स्वामी दयानंद सरस्वती गो करुणानिधि में कहते हैं कि एक गाय अपने जीवन में 410440 मनुष्यों हेतु एक समय का भोजन जुटाती है, जबकि इसके मांस से 80 मांसाहारी केवल एक समय में अपना पेट भर सकते हैं। हजरत पैगम्बर साहिब कहते हैं 'गाय का दूध बदन की खूबसूरती और तंदरुस्ती बढ़ाने का जरिया है। उसका गोश्त नुकसानदेह है।' गांधी जी कहा करते थे 'गाय उन्नति व प्रसन्नता की जननी है।' आज रासायनिक खादों के अंधाधुंध प्रयोग से कृषि योग्य भूमि को जहां बंजर होने का खतरा मंडरा रहा है। वहीं इस विषय के जानकार यह मान रहे हैं कि यदि भूमि को बंजर होने से बचाना है तो इसके मलमूत्र से बनी खाद प्रयोग में लाना ही मात्र उपाय है। जब कभी लोग धर्म से सम्बंधित अनुष्ठान करते हैं तो पुरोहित लोग गाय की महिमा बताते नहीं थकते हैं। परन्तु न तो ये स्वयं ही इन उपदेशों को व्यवहार में ला पाए हैं और न ही इनके यजमान। कुछ संतों व समाज के लोगों ने गाय की पीड़ा को समझा है। उत्तराखंड के संत नीलमणि जी उत्तर भारत में गो कथा के माध्यम से गोरक्षा हेतु जन-जागृति अभियान चलाए हुए हैं। उनकी संस्था अपने शिष्यों के माध्यम से कई गोशालाएं चला रही हैं। हमीरपुर जिले में गसोता मंदिर के संत 'महाराज गिरी' आज से ढाई वर्ष पूर्व सरकाघाट के बैतल में जब गो सदन का उद्घाटन कर रहे थे तो कह रहे थे कि जब कोई गाय को आवारा बोलता है या लिखता है तो उन्हें भारी पीड़ा होती है। इस पीड़ा का अहसास समस्त समाज को होना चाहिये। उन्होंने अपने भाषण में यह भी कहा कि गाय आवारा नहीं थी, उसे आवारा बनाया गया है। इसे समझने व इस पर आज शोध करने की आवश्यकता है। मुझे उनका यह तर्क अर्थपूर्ण लगा। आज प्रदेश में 60 के लगभग गौ सदन कार्यरत हैं। बहुत सारे गौ सदनों को पंजाब से कुछ संस्थाएं सूखा भूसा मुफ्त मुहैया कराती हैं, वहां से लाने वाले ट्रक का भाड़ा देना पड़ता है। इन गौ सदनों की गऊएं हरे घास से वंचित रहती हैं। हालांकि कुछ गौ सदनों में चरने की सुविधा है जिनमें यह सुविधा नहीं है वहां गायें कैल्सियम की कमी से जूझती देखी गई है। दुधारू गायों को छोड़ा नहीं जाता परन्तु यदि ये गाय दूध देना बंद कर दे तो ये

गाय का दूध कई व्याधियों को नष्ट करता है। गाय ही एक ऐसा पशु है जो श्वास व नि:श्वास में शत प्रतिशत ऑक्सीजन विसर्जन करती है। इसका घी कोलेस्ट्रॉल निरोधक है। अन्य सबके घी से कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है। इसके मल मूत्र में औषधीय गुण हैं। इसलिए इसे चलता फिरता चिकित्सालय भी कहते हैं। पारसी धर्म के प्रवर्तक जरथ्रुस्त ने अहुतावेंती गाथा में गाय पर अत्याचार की आलोचना की है। स्वामी दयानंद सरस्वती गो करुणानिधि में कहते हैं कि एक गाय अपने जीवन में 410440 मनुष्यों हेतु एक समय का भोजन जुटाती है, जबकि इसके मांस से 80 मांसाहारी केवल एक समय में अपना पेट भर सकते हैं।

कुमाता बनते देर नहीं लगती व बड़ी बेरहमी से इन्हें खुले में छोड़ दिया जाता है। बहुत सारे लोग इनके मलमूत्र की दुहाई देते हैं यदि वास्तव में इनके मलमूत्र में इतने गुण हैं तो लोगों के ये गुण व प्रयोग बताने होंगे जिससे आय की आशा में यही गाय फिर माता बन जाए। आज प्रदेश में पशु चिकित्सालय जगह-जगह लोगों की सुविधा हेतु खुले हैं। सरकार को इन्हें ये आदेश तो कर ही देने चाहिए कि इन गो सदनों में बंधी गायें भी प्रदेश का पशुधन है व इनका स्वास्थ्य सम्बंधी ख्याल भी इन्हीं चिकित्सालयों का जिम्मा है। एक समय ऐसा था जब ऐसा लगता था कि गौ सदन खुलने से सड़कों पर गायों की संख्या में कमी आएगी। पर यह अवधारणा गलत ही सिद्ध हुई है। आज ऐसा लग रहा कि सड़कों पर आने वाली गायों की संख्या बढ़ी है। इससे यह बात सिद्ध होने लगी है कि विदेशी शिक्षा अपना रंग दिखाने लगी है। यह एक अति चिंतनीय पहलू है। इस पर गहन शोधन की आवश्यकता है। समाज के लोगों को जाति पाति, पार्टी विशेष से तथा धर्म मान्यताओं से ऊपर उठकर गाय की इस दयनीय परिस्थिति पर सहयोग करने की आवश्यकता है। तभी गाय के गुणों का पूरा-पूरा लाभ समाज को मिल पाएगा। तभी धार्मिक ग्रंथों में वर्णित कथा कहानियां जो गाय की महिमा से भरी पड़ी है सही अर्थों में चरितार्थ होंगी। गाय के गोबर के प्रयोग से ही खादों द्वारा अन्न में आ रहे विषाक्त तत्वों में कमी आएगी व जीवन संवरेगा। ❑

शुद्ध पानी का गंदा धंधा

शुद्ध पानी के नाम पर विदेशी व स्वदेशी कम्पनियां किस प्रकार देश की सम्पदा का निर्मम दोहन कर उसे दोनों हाथों से लूट रही हैं उसका खुलासा करने के लिये निम्नलिखित दिये गए कुछ आंकड़े ही पर्याप्त हैं। अगर पानी का व्यापारीकरण होता है तो लूटखासोट का सिलसिला अपने चरम पर पहुंच जाएगा जिसमें आम आदमी के हाथों से पानी भी जाता रहेगा।

पानी के बाजार की स्थिति : वर्तमान में देश में पानी का व्यापार तीन लाख करोड़ रुपये आंका गया है जो बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। विश्व बैंक के अनुमान के अनुसार 2025 तक तेल उद्योग के बाद पानी उद्योग का नम्बर आ जाएगा। भारत में इटली की कम्पनी बिसलेरी ने 1961 में मुम्बई में पहला प्लांट लगाया। पानी के व्यापार में भारत विश्व में दसवें स्थान पर है और 1999 से 2004 के बीच पांच सालों में पानी के व्यापार में भारत में ही सर्वाधिक वृद्धि हुई। डिस्टिल पानी की खपत 5 लीटर प्रति भारतीय है जबकि विश्व में प्रति व्यक्ति 24 लीटर प्रति माह है।

बाजार के बड़े व्यापारी : देश में 200 बड़ी स्वदेशी विदेशी कम्पनियां इस व्यवसाय में लगी हैं। इनमें बिसलेरी, कोका कोला, आईएनसी (किनले), पैप्सीको इंडिया होल्डिंग प्राइवेट लिमिटेड (एक्वाफिना), नैस्ले, माणिकचंद, किंगफिशर, मोहन मीकिंग, एसकेएन बैवरेज, भारतीय रेलवे, पार्ले एग्रो जैसे बड़े नाम शामिल हैं। भारती पानी व्यवसाय पर बिसलेरी का 40 प्रतिशत, कोका कोला का 25 प्रतिशत व पैप्सीको का 10 प्रतिशत कब्जा है।

राष्ट्रीय सम्पदा पर डाका कैसे ?

पानी को लेकर हमारा कानून बिल्कुल पंगु है। अगर कोई व्यक्ति एक वर्ग मीटर जगह खरीदने के बाद वहां पम्प लगा कर कई वर्ग किलोमीटर तक का पानी प्रयोग कर ले तो कानून अनुसार उसका कुछ नहीं बिगाड़ा जा सकता। इसी का लाभ उठा रही हैं विदेशी कम्पनियां जो जमीन के पानी का बेरहमी से दोहन करती हैं और उसे सोने के भाव बेचती है। ❑

नदियों को जोड़ा जाए

सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार से पूछा है कि उसने देश की नदियों को जोड़ने की योजना क्यों ठंडे बस्ते में डाल दी है। काबिलेजिक्र है कि 1981 में विशेषज्ञों ने देश के कई हिस्सों में पड़ रहे सूखे व कई हिस्सों में आ रही बाढ़ की समस्या से निपटने के लिये सभी नदियों को परप्र जोड़ने की योजना तैयार की थी परन्तु इस योजना को गम्भीरता से नहीं लिया गया। देश के पहले वैज्ञानिक राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने जब कार्यभार सम्भाला तो इस योजना की फाइलों से मिट्टी झाड़ी गई और तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने इसके लिये कार्यबल भी गठित कर दिया परन्तु सत्ता परिवर्तन होते ही इस योजना को फिर से ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हर बार मॉनसून के दौरान ब्रह्मपुत्र व इसकी सहायक बरसाती नदियों के चलते आसाम सहित पूर्वोत्तर के कई हिस्सों में आने वाली बाढ़ भारी तबाही मचाती है। उसी समय देश के उत्तरी हिस्सों में विशेषकर राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, गुजरात में कई बार गुजारे लायक बरसात भी नहीं होती। अगर देश की नदियों को जोड़ दिया जाता है तो इसकी पूरी सम्भावना है कि देश में पानी की समस्या काफी सीमा तक हल हो जाएगी। ❑

नेपाल में माओवादी संगठन में फूट

राजनेताओं में संविधान पर सहमति न बन पाना और इस कारण प्रधानमंत्री के नए चुनाव करवाने की घोषणा के बाद नेपाल में राजनीतिक सरगर्मी ने अब नया मोड़ ले लिया है। माओवादी नेताओं में बढ़ते मतभेदों को देखते हुए सर्वोच्च माओवादी नेता प्रचंड ने अध्यक्ष पद से अपने इस्तीफे की पेशकश की है। प्रचंड के इस्तीफे से ये बाता तो साफ हो गई है कि नेपाल की राजनीति में माओवादियों की भूमिका को लेकर अध्यक्ष प्रचंड एवं उपाध्यक्ष मोहन वैद्य किरण की आपसी खींचतान से माओवादियों का संगठन टूटने की कगार पर पहुंच गया है। प्रचंड ने कहा कि बढ़ते मतभेदों को देखते हुए यदि उनके अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने से माओवादियों को टूटने से बचाया जा सकता है तो वे इसके लिये तैयार हैं। हालांकि उनकी इस पेशकश के बावजूद मामला शांत होता नहीं दिख रहा है।

माओवादी शीर्ष नेताओं ने प्रचंड पर देश में जातीय राजनीति को बढ़ावा देकर जातीय हिंसा भड़काने की साजिश रचने का आरोप लगाते हुए इसका कड़ा विरोध किया है। इन नेताओं ने प्रचंड पर राजनीतिक पार्टियों से विचार-विमर्श किये बिना संविधान सभा (नेपाल की संसद) भंग करने का भी आरोप लगाया है।

माओवादी शीर्ष नेताओं ने प्रचंड पर देश में जातीय राजनीति को बढ़ावा देकर जातीय हिंसा भड़काने की साजिश रचने का आरोप लगाते हुए इसका कड़ा विरोध किया है। इन नेताओं ने प्रचंड पर राजनीतिक पार्टियों से विचार-विमर्श किये बिना संविधान सभा (नेपाल की संसद) भंग करने का भी आरोप लगाया है। सूत्रों के अनुसार मोहन वैद्य किरण गुट चाहता है कि प्रचंड उनके खेमे में शामिल पार्टी के महासचिव बादल को देश की भावी सरकार में प्रधानमंत्री बनाने के प्रस्ताव का समर्थन करे तथा पार्टी के विखंडन के कयासों को दूर करने के लिए उनसे वार्ता करें। वहीं पार्टी सूत्रों से छन कर जो खबरें आ रही है उसके अनुसार पार्टी का विभाजन हो चुका है, केवल इसके नाम की घोषणा करना बाकी है।

गौरतलब है कि प्रचंड के साथ प्रधानमंत्री बाबूराम भट्टराई समेत हरिवोल गजुरेल, कृष्ण बहादुर मेहरा, उपाध्यक्ष नारायण काजी श्रेष्ठ समेत कई केंद्रीय सदस्य खड़े हैं। वहीं उपाध्यक्ष मोहन वैद्य किरण गुट में महासचिव बादल, पम्फा फुसाल, पिछले दिनों पार्टी से अलग हो चुके माओवादी नेता मात्रिका यादव, क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता मणि थापा समेत अक्षमता के आधार पर माओवादी सेना से बाहर किये गए असंख्य लड़ाके शामिल हैं। इसी बीच नेपाल में संविधान सभा भंग होने एवं सितम्बर में चुनाव की घोषणा के पीछे माओवादियों का हाथ होने का आरोप लगाते हुए विभिन्न राजनीतिक पार्टियों ने इसकी आलोचना शुरू कर दी है। नेपाली कांग्रेस ने एकीकृत नेकपा माओवादी पर देश को राजनीतिक अस्थिरता की ओर ढकेलने के लिये साजिशतन संविधान सभा (नेपाल की संसद) भंग करने का आरोप लगाया है। पार्टी मुख्यालय सानेपा में संवाददाताओं को सम्बोधित करते हुए पार्टी अध्यक्ष सुशील कोईराला ने कहा कि संविधान सभा भंग कर देश में दोबारा चुनाव कराने के पीछे माओवादियों की मंशा देश की राजनीति को अस्थिर करना है। उन्होंने इसे देशवासियों के साथ धोखा करार देते हुए प्रधानमंत्री डॉ. बाबूराम भट्टराई के तत्काल इस्तीफे की मांग की। (साभार : हिन्दुस्थान समाचार) ❑

ज्ञान-विज्ञान की भाषा है संस्कृत

1. कम्प्यूटर में इस्तेमाल के लिये सबसे अच्छी भाषा। संदर्भ : द फोर्ब्स पत्रिका 1987

2. सबसे अच्छे प्रकार का कैलेंडर जो इस्तेमाल किया जा रहा है, हिन्दू कैलेंडर है (जिसमें नया साल सौ प्रणाली के भूवैज्ञानिक परिवर्तन के साथ शुरू होता है) संदर्भ : जर्मन स्टेट यूनिवर्सिटी।

3. दवा के लिये सबसे उपयोगी भाषा अर्थात् संस्कृत में बात करने से व्यक्ति स्वस्थ। वह बी.पी., मधुमेह, कॉलेस्ट्रॉल आदि जैसे रोग से मुक्त हो जाएगा। संस्कृत में बात करने से मानव शरीर का तंत्रिका तंत्र सक्रिय रहता है जिससे व्यक्ति का शरीर सकारात्मक आवेश के साथ सक्रिय हो जाता है। संदर्भ : अमेरिकन हिन्दू यूनिवर्सिटी (शोध के बाद)।

4. संस्कृत वह भाषा है जो अपनी पुस्तकों वेद, उपनिषदों, श्रुति, स्मृति, पुराणों, महाभारत, रामायण आदि में सबसे उन्नत प्रौद्योगिकी रखती है। संदर्भ : एशियन स्टेट यूनिवर्सिटी।

नासा के पास 60 हजार ताड़ के पत्ते की पांडुलिपियां हैं जो वे अध्ययन कर उपयोग कर रहे हैं। असत्यापित रिपोर्ट का कहना है कि रूसी, जर्मन, जापानी, अमेरिकी सक्रिय रूप से हमारी पवित्र पुस्तकों से नई चीजों पर शोध कर रहे हैं और उन्हें वापिस दुनिया के सामने अपने नाम से रख रहे हैं।

दुनिया के 17 देशों में एक या अधिक संस्कृत विश्वविद्यालय संस्कृत के बारे में अध्ययन और नई प्रौद्योगिकी प्राप्त करने के लिये हैं, लेकिन संस्कृत को समर्पित उसके वास्तविक अध्ययन के लिये एक भी संस्कृत विश्वविद्यालय इंडिया (भारत) में नहीं है।

5. दुनिया की सभी भाषाओं की मां संस्कृत है। सभी भाषाएं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस भाषा से प्रभावित हैं। संदर्भ : द यूएनओ।

6. नासा वैज्ञानिक द्वारा एक रिपोर्ट जारी की गई है कि अमेरिका संस्कृत भाषा पर आधारित 6 और 7वीं पीढ़ी के सुपर कम्प्यूटर बना रहा है जिससे सुपर कम्प्यूटर का अपनी अधिकतम सीमा तक उपयोग किया जा सके। परियोजना की समय सीमा 2025 (6वीं पीढ़ी के लिये) और 2034 (7वीं पीढ़ी के लिये) है, इसके बाद दुनिया भर में संस्कृत सीखने के लिये एक भाषा क्रांति होगी।

7. दुनिया में अनुवाद के उद्देश्य के लिये उपलब्ध सबसे अच्छी भाषा संस्कृत है। संदर्भ : फोर्ब्स पत्रिका 1985

8. संस्कृत भाषा वर्तमान में उन्नत किर्लियन फोटोग्राफी तकनीक में इस्तेमाल की जा रही है। (वर्तमान में, उन्नत किर्लियन फोटोग्राफी तकनीक सिर्फ रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका में ही मौजूद है। भारत के पास आज सरल किर्लियन फोटोग्राफी भी नहीं है)

9. अमेरिका, रूस, स्वीडन, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान और ऑस्ट्रिया वर्तमान में भारत नाट्यम और नटराज के महत्त्व के बारे में शोध कर रहे हैं। (नटराज शिव जी का कॉस्मिक नृत्य है। जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र कार्यालय के सामने शिव या नटराज की एक मूर्ति है।)

10. ब्रिटेन वर्तमान में हमारे श्रीचक्र पर आधारित एक रक्षा प्रणाली पर शोध कर रहा है। ❑

इस अंक के उत्तर :

प्रश्नोत्तरी : 1. ब्रह्मगुप्त, 2. हिलजुल सम्भव बनाना, 3. कुम्भ मेला, 4. चाणक्य, 5. ब्रिगेडियर, 6. यूनिवर्सल को ऑर्डिनेटर टाइम, 7. सुभद्रा 8. सन् 1930 ई. में, 9. मिन्नोज मछली को, 10. मद्रास

With best compliments from

WINSOME

Textile Industries Ltd.
sco#191-192, Sector 34-A,
Chandigarh - 160022 (INDIA)

Tel: +91-0172-2603966,
4612000, 4613000
Fax: +91-0172-4614000
website: www.winsomegroup.com

इस्लामी देशों में भी गीता प्रचार

इंटरनेशनल गीता सोसायटी ने भारत से बाहर भगवद् गीता के प्रचार के लिये स्कूल स्थापित करने की योजना तैयार की है। विगत माह ऐसे ही एक स्कूल की स्थापना बांग्लादेश के दिनाजपुर जिले के सुबिधत गांव में की गई। इस स्कूल का नाम विश्व निकेतन रखा गया है। इंटरनेशनल गीता सोसायटी द्वारा ऐसे विद्यालय पाकिस्तान, अफगानिस्तान, श्रीलंका आदि देशों में स्थापित किये जाएंगे। पाकिस्तान में इन स्कूलों की स्थापना इंटरनेशनल गीता सोसायटी पाकिस्तान तथा पाकिस्तान हिन्दू सेवा के माध्यम से की जाएगी।❑

अमेरिका में गीता की शपथ

अमरीका के न्यू जर्सी में एक स्थानीय निकाय के लिये चुने गए भारतीय मूल के डॉ. सुधांशु प्रसाद ने गीता को साक्षी मानकर शपथ ग्रहण की। प्रसाद इसेलिन एडिसन इलाके में रहते हैं। इस इलाके में भारतीय मूल के लोगों की अच्छी संख्या है। इसी इलाके में वह दोबारा न्यू जर्सी नगर परिषद के सदस्य चुने गए हैं। ❑

गोर्बाचोव की धेवती सीख रही है वास्तुशास्त्र के सूत्र

भारतीय धर्म और अध्यात्म प्राचीन काल से ही पूरी दुनिया को आकर्षित करते रहे हैं। योग और प्राणायाम का लोहा विश्व मान चुका है। अब ज्योतिष और वास्तु की बारी है। सोवियत संघ के पूर्व राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचोव की धेवती हरिद्वार में वास्तुशास्त्र के गुर सीख रही हैं। वास्तुशास्त्र के सटीक सत्य ने उन्हें चमत्कृत कर दिया है।

गोर्बाचोव की इकलौती पुत्री राइसा की बेटी ऐंसथीसिया पिछले तीन महीनों से कनखल और ऋषिकेश में रह कर वास्तुशास्त्र का अध्ययन कर रही हैं। पेशे से आर्किटेक्ट ऐंसथीसिया भारतीय प्राच्य विद्या सोसायटी के निदेशक डॉ. प्रतीक मिश्रपुरी की शिष्या हैं। ऐंसथीसिया शाकाहार से इतनी प्रभावित हुई हैं कि वह मांसाहार छोड़कर शाकाहारी बन गई हैं। जींस और स्कर्ट पहनने वाली ऐंसथीसिया भारतीय स्त्रियों की वेशभूषाओं से काफी प्रभावित हैं। वह रूसी और अंग्रेजी के अलावा टूटी-फूटी हिन्दी भी बोल लेती हैं। ❑

ब्रिटेन में ईसाईयत खात्मे की ओर

ईसाईयत के गढ़ ब्रिटेन में अब इस धर्म का सूरज छिपने को है। अरब संवाद एजेंसी अलजजीरा के अनुसार गत नौ वर्ष में 30 हजार ब्रिटिश नागरिकों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया है। गत वर्ष ही 5200 व्यक्ति मुसलमान बने। दैनिक सहाफत के अनुसार, 2030 तक ब्रिटेन में ईसाई अल्पमत में आ जाएंगे। रिपोर्ट के अनुसार ब्रिटेन में हर वर्ष 5 लाख से अधिक व्यक्ति ईसाई धर्म छोड़ रहे हैं। ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स ने अपने अनुसंधान में पाया है कि गत छह वर्षों में देश में मुसलमानों की संख्या बढ़ कर 37 प्रतिशत हो गई है। जबकि हिन्दुओं की संख्या में 43 प्रतिशत और बौद्ध धर्म को मानने वालों की संख्या में 74 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। ❑

ल्हासा पहुंची चीन विरोधी आग

चीन सरकार के खिलाफ तिब्बती बौद्ध भिक्षुओं के विरोध की आग ल्हासा तक पहुंच चुकी है। गत माह यहां पहली बार एक प्रसिद्ध मठ के बाहर दो तिब्बती बौद्ध भिक्षुओं ने आत्मदाह कर लिया इनमें से एक की मौत हो गई। तिब्बत की राजधानी में यह इस तरह की पहली और प्रांत में दूसरी घटना है।

2008 में बीजिंग ओलंपिक के दौरान आजादी को लेकर प्रदर्शन कर रहे लोगों पर चीनी सुरक्षा बल ने जमकर कहर बरपाया था। 200 से अधिक लोग मारे गए थे, जिसमें 140 सिर्फ ल्हासा लोग मारे गए थे। मार्च 2012 में विदेशी पत्रकारों के ल्हासा दौरे के दौरान बौद्ध भिक्षुओं ने प्रदर्शन किया जिसके बाद सुरक्षा बलों ने ल्हासा को चारों तरफ से घेर कर सील कर दिया था।

15 मार्च, 2012 को चीनी शासन के विरोध में एक बौद्ध भिक्षु के आत्मदाह के बाद सैकड़ों तिब्बतियों ने पश्चिमी चीन में एक विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया था। ल्हासा में दंगों की चौथी बरसी के मौके पर कगिहाई प्रांत के तोंगरेन नगर में एक बौद्ध भिक्षु ने खुद को आग लगा ली थी। अब तक तिब्बती क्षेत्रों में 35 बौद्ध भिक्षुओं ने आत्मदाह का प्रयास किया है। ❑

हीरो बनने का सपना

चिंकू को फिल्में देखने का शौक था। फिल्में देखकर वह हीरो बनने का सपना देखा करता। जॉनी उसका बहुत अच्छा मित्र था। उसके मामाजी मुम्बई में रहते थे। वह फिल्म उद्योग के कैमरामैन थे और काफी प्रसिद्ध थी। रक्षाबंधन के मौके पर अपनी बहन के घर आए थे।

मामाजी के साथ केवल कार का ड्राइवर था इसलिए जब उन्होंने जॉनी से अपने साथ मुम्बई घूमने चलने को कहा तो वह झट तैयार हो गया। 'मामा जी, क्या मेरे साथ मेरा दोस्त चिंकू भी चल सकता है?' जॉनी ने उनसे पूछा।

'हां हां, क्यों नहीं। यह तो और भी अच्छा रहेगा। फिर तुम दोनों इकट्ठे वापिस लौटोगे तो हमें भी चिंता नहीं रहेगी।' उन्होंने सहर्ष सहमति दे दी।

जॉनी के माता-पिता को भी यह प्रस्ताव बहुत पसंद आया। जॉनी ने तुरंत चिंकू को खबर की। चिंकू बहुत खुश हुआ। इस तरह चिंकू जॉनी के साथ फिल्मों के बारे में तरह-तरह के सपने देखता मुम्बई की ओर चल पड़ा। मुम्बई में जॉनी की मामी जी उसे और चिंकू को देखकर बहुत खुश हुई।

इस दौरान वे एक फिल्म की शूटिंग देखने मुम्बई-पुणे रोड पर गए। जब फिल्म की पूरी यूनिट निश्चित जगह इकट्ठी हुई तब चारों तरफ अच्छी धूप फैल चुकी थी। देखते ही देखते सभी अपने-अपने कामों में जुट गए।

उस दिन एक गाने पर नृत्य के दृश्यों की शूटिंग होनी थी। इसमें भाग लेने के लिये बहुत-सी लड़कियां रंग-बिरंगी पोशाकें पहने तैयार हो रही थीं।

तैयारी पूरी होने की शूटिंग शुरू हो गई। इससे पहले नृत्य निर्देशक ने हीरो, हीरोइन तथा अन्य नाचने वाली लड़कियों को नाच की मुद्राओं का अच्छा खासा अभ्यास करा दिया था लेकिन शूटिंग के समय छोटी से छोटी गलती भी नजरअंदाज नहीं की जाती थी। जहां भी किसी से जरा-सी चूक हो जाती, निर्देशक जोर से 'कट' बोलता और जॉनी के मामा जी फौरन कैमरा बंद कर देते थे।

तब नृत्य निर्देशक गलती करने वाले अभिनेता या अभिनेत्री को उसकी गलती समझाता थ। फिर उस दृश्य की दोबारा शूटिंग होती थी।

धीरे-धीरे सूरज आसमान में चढ़ने लगा और उससे धूप और गर्मी बढ़ने लगी। साथ ही रिफ्लैक्टरों की चकाचौंध ने जॉनी और चिंकू दोनों को ही परेशान कर दिया लेकिन पूरी यूनिट के लोग पहले जैसी लगन से ही गाने की एक-एक लाईन के लिये एक-एक दृश्य को कई-कई बार फिल्मा रहे थे। जब तक निर्देशक ओ.के. नहीं करता था, दृश्य को बार-बार फिल्माना जारी रहता था।

दोपहर में एक घंटे के लिये खाने की छुट्टी हुई तो जॉनी और चिंकू ने चैन की सांस ली।

खाने के बाद शूटिंग फिर से शुरू हो गई। जब धूप ढल गई तो निर्देश ने पैकअप की घोषणा कर दी लेकिन सामान समेट कर घर पहुंचते-पहुंचते रात का अंधेरा घिर चुका था।

रात भर चिंकू कुछ सोचता रहा। सुबह सो कर उठा तो उसने जानी के मामा जी से पूछा, 'मामा जी, क्या मैं फिल्म अभिनेता बन सकता हूं?'

मामा जी ने पल भर के लिये उसे ध्यान से देखा, फिर उसी से प्रश्न कर दिया, 'क्या इसके लिये कड़ी मेहनत कर सकोगे?'

'मैंने सोच लिया है कि मैं बहुत मेहनत करूंगा।' चिंकू ने दृढ़ स्वर में जवाब दिया।

'ठीक है, लेकिन अभिनेता बनने के लिये इतना ही काफी नहीं होगा। तुम्हें स्क्रीन टेस्ट भी देना होगा।'

चिंकू हड़बड़ा गया। वह इतनी जल्दी परीक्षा देने के लिये तैयार नहीं था लेकिन वह जल्दी ही सम्भल गया और मामा जी के साथ जाने के लिये तैयार होने लगा।

अब चिंकू के सोचने की दिशा ही बदल गई। वह स्कूल के नाटकों में भाग लेता था, इसलिए उसको विश्वास था कि एक दिन वह स्क्रीन टेस्ट में जरूर सफल हो जाएगा। तब हो सकता है कि उसे किसी फिल्म में काम मिल जाए। इसके बाद उसने कई फिल्मों के लिये ऑडिशन दिया। एक-दो में सफलता भी मिली किन्तु अभिनय में निपुण न होने के कारण उसे संतुष्टि नहीं होती। ऐसी स्थिति में चिकू का उतरा हुआ चेहरा देख कर उसके मामा ने उसे पहले अपनी शैक्षणिक योग्यता को पूरा करने तथा उसके बाद इस क्षेत्र में प्रशिक्षण लेने की सलाह दी। इस पूरे घटनाक्रम ने चिंकू पर चढ़ा फिल्मी भूत उतार दिया। ❑

कम्प्यूटर वायरस क्या है?

पिछले कुछ वर्षों में जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर का पदार्पण हो चुका है और यह विभिन्न तरीकों से विभिन्न प्रकार की भूमिकाएं निभा रहा है। कम्प्यूटर क्रांति को उस वक्त एक बड़ा धक्का लगा जब कम्प्यूटर में वायरस की घुसपैठ हुई और इसने कम्प्यूटर सिस्टम को नष्ट करना शुरू कर दिया। कम्प्यूटर वायरस का मुख्य उद्देश्य कम्प्यूटर के प्रोग्राम्स को नुकसान पहुंचाना था और इसके आप्रेशनल मैकेनिज्म को नष्ट करना था। क्या आप जानते हैं कि कम्प्यूटर वायरस क्या है?

कम्प्यूटर वायरस एक ऐसा प्रोग्राम है जो किसी न किसी ढंग से प्रोग्राम्स को संक्रमित करता है। वह यह काम प्रोग्राम्स में बदलाव लाकर या उन्हें नष्ट करके करता है। यह तेजी से फैलता है। कम्प्यूटर वायरस की चार प्रमुख विशेषताएं होती हैं– क. यह कम्प्यूटर निर्देशों का एक सैट होता है। ख. इसका निर्माण जान-बूझकर किया जाता है। ग. यह होस्ट प्रोग्राम का प्रयोग करके प्रोपेगेट करता है। घ. यह आप्रेशनल मैकेनिज्म को नष्ट करने या नुकसान पहुंचाने जैसा अवांछित कार्य करता है।

स्पष्ट है कि कम्प्यूटर जान-बूझकर तैयार किया गया सॉफ्टवेयर प्रोग्राम होता है और इसे प्रोग्राम एरर या हार्ड वेयर की गलत कार्यप्रणाली नहीं समझना चाहिये। वायरस फाइलों को डिलीट करके डिस्क को फारमेट करके और की-बोर्ड इनपुट में परिवर्तन करके अवांछित कार्य करता है।

कम्प्यूटर वायरस विभिन्न प्रकार के होते हैं जिनके उद्देश्य अलग-अलग होते हैं परन्तु इन्हें दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। 1. रैजीडेंट वायरस, 2. नॉन रेजीडेंट वायरस।

रैजीडेंट वायरस वे होते हैं जो क्रियाशील होने पर मैमोरी में अपना कोड इंस्टॉल कर देते हैं और वहां से डिस्क या प्रोग्राम्स को संक्रमित करते हैं। दूसरी ओर नॉन रैजीडैंट वायरस मैमोरी में खुद को इंस्टॉल नहीं करते परन्तु किसी संक्रमित प्रोग्राम के चलने पर फैलते हैं।

वायरस के हमलों से प्रोग्राम को बचाने के लिये कई सुरक्षा मापदंड अपनाए जाते हैं। उदाहरण के लिये सॉफ्टवेयर को प्रमाणित स्रोत से ही होना चाहिये। अनाधिकृत लोग सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल न कर सकते हों। आमतौर पर दूसरों की फ्लॉपीज, पैन ड्राइव का इस्तेमाल नहीं करना चाहिये। उन्हें इस्तेमाल करने से पहले स्पेशल प्रोग्राम्स की सहायता से चैक कर लेना चाहिये। महत्वपूर्ण डाटा तथा प्रोग्राम फाइल्स का पर्याप्त बैकअप या अतिरिक्त कापियां होनी चाहिये। थोड़े-थोड़े अंतराल पर सिस्टम को चैक करते रहें।

सभी मापदंड अपनाने के बाद भी यदि आपके कम्प्यूटर पर वायरस का हमला हो तो किसी विशेष की सलाह लें या फिर उपलब्ध एंटी वायरस सॉफ्टवेयर्स का प्रयोग करें। ❑

हंसते-हंसते

☺ जंगल में एक चूहा बड़ी तेजी से भागा जा रहा था। हिरण ने उसे रोका और पूछा, 'भाई इतनी तेज़ कहां भागे जा रहे हो?'
चूहा, 'किसी ने हाथी को धक्का देकर गिरा दिया है और सब मेरा नाम लगा रहे हैं।'

☺ विनोद (कमल से), 'कई कुत्ते अपने मालिकों से ज्यादा समझदार होते हैं।'
कमल, 'तुम्हें कैसे मालूम पड़ा?'
विनोद, 'तुम्हारे कुत्ते को देखकर।'

☺ सोनू (मां से), 'मां आज मेरा दोस्त घर आ रहा है। घर के सभी खिलौने छुपा दो।'
मां, 'तुम्हारा दोस्त चोर है क्या?'
सोनू, 'नहीं! वह अपने खिलौने पहचान जाएगा।'

☺ पिता, 'बेटे! क्या तुम गर्म मसाला नहीं लाए?'
बेटा, 'पिता जी मैंने हाथ लगाकर देखा तो वह ठंडा था।'

प्रश्नोत्तरी

1. खगोल विज्ञान पर अनेक ग्रंथ लिखने वाले महान प्राचीन खगोलविद् का नाम बताएं?
2. इन्सान के शरीर में हड्डियों के जोड़ का क्या कार्य है?
3. कौन-सा भारतीय उत्सव 12 वर्षों में एक बार मनाया जाता है।
4. नीति शास्त्र पर 'अर्थशास्त्र' नाम के ग्रंथ के रचयिता कौन थे?
5. भारतीय सेना में कर्नल से ऊपर का पद कौन-सा होता है?
6. समय मानकों के संदर्भ में यू.टी.सी. क्या है?
7. महाभारत में अभिमन्यु की मां कौन थीं?
8. सर सी.वी. रमण के भौतिक विज्ञान के लिये नोबल पुरस्कार किस वर्ष दिया गया था?
9. मच्छर के लार्वा के जैविक नियंत्रण के लिये किस मछली को पानी में छोड़ा जाता है?
10. भारत के किस शहर में पहली आधुनिक नक्षत्रीय वेधशाला निर्मित की गई थी।

Incredible India

Har Gaon Ki Kahani

Unforgettable Himachal

Experience rural tourism and know the stories of Himachal villages, folklore, traditions, cultural heritage and legends as old as during the Pandava's period.

HIMACHAL TOURISM
Unforgettable Himachal

ADMAN

Plan your holidays with the click of a mouse : www.himachaltourism.gov.in

Himachal Tourism, Block No 28, S.D.A Complex, Kasumpti, Shimla - 171009. Ph.: 0177 - 2625864, 2625511, 2623959, 2625924, Fax: 0177-2625456. E-mail: tourismmin-hp@nic.in, tourism@hp.gov.in
For online bookings visit: www.hptdc.gov.in, www.himachalhotels.in >***Tourist Information Centres*** • Delhi : 011-23324764, 23325320 • Mumbai : 022-22181123, 22180080 • Kolkata : 033 - 22126361 • Chennai : 044 - 25385689 • Ahmedabad:079 - 27544800 • Chandigarh:0172 - 2707267, 2708569 • Pathankot: 0186 - 2220316 • Dalhousie:01899 - 242225 • Dharamshala:01892 - 224430, 224212 • Manali: 01902 - 252175, 252325 • Shimla: 0177 - 2832498, 2652561, 2654589.

HP/48/SML (upto 31-12-2014) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

मातृवन्दना

(मासिक)

मातृवन्दना पत्रिका पिछले 17 वर्षों से राष्ट्रीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विचारों को हिमाचल के दूर-दराज के पहाड़ी क्षेत्रों में पहुंचाने हेतु सतत प्रयत्नशील है। वैसे आज के इस प्रदूषित वातावरण में अच्छा साहित्य उपलब्ध करवाना अपने आप में एक चुनौतिपूर्ण लेकिन अति महत्वपूर्ण कार्य है, परन्तु आज आपके सहयोग से हम यह कार्य कर पा रहे हैं। इसका प्रसार व्यापक तथा हर कोने को छूने वाला है। परिणामस्वरूप मातृवन्दना की प्रसार संख्या 35,000 है तथा प्रदेश में 3 लाख से अधिक पाठक 9 हजार स्थानों पर पत्रिका पढ़ रहे हैं। निकट भविष्य में इसकी प्रसार संख्या 40 हजार से अधिक तक पहुंचाने का हमारा प्रयास है। प्रदेश की सर्वाधिक प्रसारित होने वाली मासिक पत्रिका

विज्ञापन दरें

वार्षिक (कुल 11 अंक)		मासिक	
पूर्ण पृष्ठ (रंगीन)	रू 90,000	पूर्ण पृष्ठ (रंगीन)	रू 20,000
आधा पृष्ठ (रंगीन)	रू 50,000	आधा पृष्ठ (रंगीन)	रू 10,000
		पूर्ण पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	रू

तकनीकी विवरण

आकार छपा पृष्ठ मी.	22 सें.मी.x16 सें.	कॉलम की चौड़ाई	7.5 सें.

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा शर्मा बिल्डिंग, बीसीएस, शिमला - 171 009, से प्रकाशित।

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276